RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
राजनीतिक ब्यूरो
अमरेंद्र शर्मा 9899360011
प्रबंधक
अविनाश कुमार 8287266244
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह 9546224277
क्राइम ब्यूरो
एसएन श्याम
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,
(ब्यूरो चीफ), 9334194515, 7677093032
समस्तीपुर : राजेश कुमार
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
कटोरिया : दीपक चौधरी, विशेष संवाददाता
9973077043
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
सहरसा : आशीष झा
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : एश्वर्या सिंह, स्वाति
ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318
झारखंड : जीतन कुमार
प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी
भाजपा

जय जयराम सिंह
JJRS CONSTRUCTION
PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 11, अंक : 8, अगस्त 2025, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

08 भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ संजय मयूख अजगैबीनाथ धाम से देवघर की कर...

भोजपुरी सुपर स्टार व सांसद... 09

2025 फिर से नीतीश : सुशासन... 18

बदलाव की आहट या नेतृत्व से ... 20

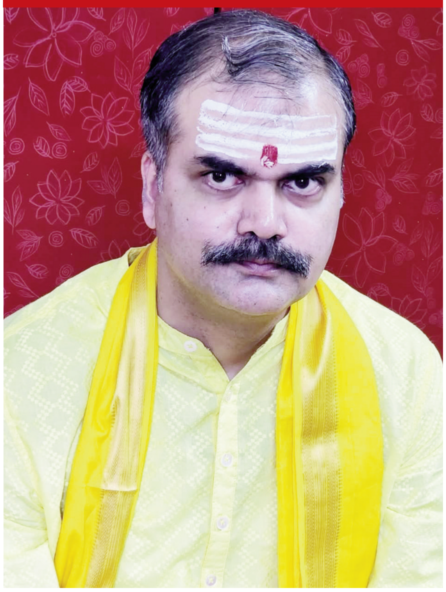

जनसेवा का दूसरा अध्याय : करगहर ... 11

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

कुदरत का कोहराम

मानसून की दस्तक के साथ ही हिमाचल व उत्तराखंड में दरकते पहाड़ व रौद्र रूप दिखाती नदियां चिंता बढ़ाने वाली हैं। कुदरत के कहर के सामने इंसान बौना ही नजर आता है। तमाम मुख्य नदियां उफान पर हैं। जगह-जगह भूस्खलन से सड़कें ठप पड़ी हैं। हिमाचल में मूसलाधार बारिश के बीच मलबा व पत्थर गिरने से सैकड़ों सड़कें बंद हो गई हैं। सामान्य जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है। पहले हम गर्मी से त्रस्त होकर बारिश की आस लगाए होते हैं, लेकिन जब बारिश आती है तो स्थितियां डराने वाली हो जाती हैं। निस्संदेह ग्लोबल वार्मिंग संकट के चलते बारिश के पैटर्न में बड़ा बदलाव आया है। बारिश कम समय में ज्यादा मात्रा में बरसती है। जिससे न केवल पहाड़ों में कटाव बढ़ जाता है बल्कि पानी के साथ भारी मात्रा में मलबा गिरकर रास्तों व पानी के प्राकृतिक मार्गों को अवरुद्ध कर देता है। यह संकट इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि हमने पहाड़ों को विलसिता का केंद्र बना दिया है। तीर्थाटन अब पर्यटन जैसा हो गया है। पर्यटकों के वाहनों से छोटी सड़कें और पुल दबाव में हैं। नीति-नियंताओं ने पहाड़ों में सड़कों को फोर लेन-सिक्स लेन बनाने का जो उपक्रम किया है, उससे पहाड़ों का नैसर्गिक वातावरण खतरे में है। पहाड़ों के किनारे काटने से भूस्खलन की गति तेज हुई है। गाहे-बगाहे पहाड़ों का मलबा सड़कों पर गिरकर यातायात को अवरुद्ध कर देता है। यात्रियों के जीवन पर हर समय संकट बना रहता है। हिमाचल की ही तरह से कुदरत के कोहराम से उत्तराखंड भी बुरी तरह त्रस्त है। भागीरथी, अलकनंदा, मंदाकिनी व पिंडर आदि नदियां खतरे के निशान के ऊपर बह रही हैं। चारधाम यात्रा मार्ग पर मलबा गिरने की घटनाएं बढ़ने से यात्रा कुछ समय के लिये स्थगित की गई है। बार-बार भारी बारिश का रेड अलर्ट जारी किया जा रहा है। जगह-जगह सड़कों के कटने से सैकड़ों यात्री फंसे हुए हैं। कई गांवों को जोड़ने वाली सड़कें बह गई हैं। बादल फटने की आशंका भी लगातार बनी रहती है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री जाने वाले मार्ग जगह-जगह बाधित हैं। भारी बारिश की आशंका को देखते हुए स्कूल व आंगनबाड़ी केंद्रों में छुट्टियां घोषित की गई हैं। सामान्य जन-जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। कई मोटरमार्ग पूरी तरह अवरुद्ध हुए हैं। कई छोटे पुल बह गए हैं। कई निचले स्थानों से लोगों को हटाया गया है। कुल मिलाकर लाखों लोगों को अतिवृष्टि ने बंधक बना दिया है। निश्चित रूप से तेज बारिश और उसके प्रभाव इंसानी नियंत्रण से बाहर होते हैं। लेकिन इसके बावजूद पहाड़ी इलाकों में विकास के मॉडल पर नये सिरे से विचार करने की जरूरत है। पहाड़ अध्यात्म के केंद्र भी रहे हैं, उन्हें पर्यटकों की विलसिता का केंद्र नहीं बनाया जाना चाहिए। हमें अपेक्षाकृत नये हिमालयी पहाड़ों और उसके परिस्थितिकीय तंत्र के प्रति संवेदनशील व्यवहार करना चाहिए। ज्यादा मानवीय हस्तक्षेप से ग्लेशियर पिघल रहे हैं और नदियों का बढ़ा जल संकट का कारण भी बन रहा है।

नीति-नियंताओं ने पहाड़ों में सड़कों को फोर लेन-सिक्स लेन बनाने का जो उपक्रम किया है, उससे पहाड़ों का नैसर्गिक वातावरण खतरे में है। पहाड़ों के किनारे काटने से भूस्खलन की गति तेज हुई है। गाहे-बगाहे पहाड़ों का मलबा सड़कों पर गिरकर यातायात को अवरुद्ध कर देता है।

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
प्रणाम बांका
बांका की तस्वीर तभी बदलेगी, जब यहां का हर युवा बदलाव का वाहक बनेगा।
जवाहर कुमार झा
निर्दलीय प्रत्याशी-2025
बांका - विधानसभा, बिहार

विधानसभा चुनाव छुट जायेगा पसीना !

राजकिशोर सिंह

बिहार की राजनीति कब और किस तरह से करवट लेगी फिलहाल कहना मुश्किल होता है. इस बार बिहार का चुनाव एक बार फिर से नीतीश कुमार के इर्द गिर्द बुना जा रहा है. भाजपा ने फि लहाल राज्य में नीतीश की जनता दल यूनाइटेड के नेतृत्व में चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया है. वहीं तेजस्वी यादव उनके विरोधी दल के नेता के रूप में मुखर रहेंगे. उनकी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल के सामने एनडीए को टक्कर देने की चुनौती है. एनडीए में साल 2020 के पिछले बिहार विधानसभा चुनाव में चिराग पासवान के तौर पर दरार देखी गई थी और इसका फायदा राजद को मिला था. आगामी अक्टूबर-नवंबर माह में होने वाले चुनाव में यहां एनडीए बनाम महागठबंधन समर्थित दलों के बीच मुख्य मुकाबला होने के स्पष्ट आसार दिखाई पड रहे हैं. किसी-किसी निर्वाचन क्षेत्र में प्रशांत किशोर की अगुवाई वाली जन सुराज पार्टी चुनावी जंग को त्रिकोणीय बनाते हुए कामयाबी हासिल कर सकती है. बिहार विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुटे दल हर तरह के हथकंडे अपनाने में लगे हुए हैं. इसमें खास ये है कि संख्या बल में अधिक गैर सवर्ण बिरादरी के मतदाताओं पर सबका ध्यान है. हर दल लगभग 84% वाले गैर अगड़ी जाति के मतदाताओं को लुभाने की कोशिश में हैं. करीब 16% वाले सवर्ण मतदाताओं को सियासी अभियान में शामिल नहीं करना राजनीतिक दलों की मजबूरी जैसा प्रतीत हो रहा है. डर है कि सवर्णों को साथ जोड़ने से अन्य बिरादरी के मतदाता छिटक न जाएं.

बिहार विधानसभा चुनाव की सरगर्मी अब बढ़ने लगी है. चुनावी समीकरण भी अब आकार ले रहे हैं. ऐसे में एक बार फिर से चुनावी गठबंधन की बात जोर शोर से उठ रही है. बिहार का चुनाव इस बार कई मायनों में बहुत अलग होने जा रहा है. बिहार चुनाव में नेताओं के भाषण बहुत ही कसैला और कड़वा होने जा रहे हैं. बजट सत्र में ही इसकी झलक दिखाई देने लगी है. तेजस्वी हों या फिर नीतीश दोनों ही व्यक्तिगत हमला कर रहे हैं. एनडीए हो या फिर महागठबंधन दोनों तरफ से व्यक्तिगत हमले हो रहे हैं. नीतीश कुमार सदन में तेजस्वी को बच्चा कहकर बात करते हैं. इस तरीके से वह उनके कद को कम करने का प्रयास करते हैं. नीतीश का कहना है कि उन्होंने तेजस्वी के पिता लालू यादव के साथ राजनीति की है. ऐसे में वह उन्हें क्या सिखाएंगे?. नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव इस समय नीतीश कुमार के साथ ही उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी का भी राजनीतिक हमला झेल रहे हैं. इसके साथ ही अन्य नेता भी तेजस्वी पर हमलावर हैं. बिहार की राजनीति यही कोई तीन दशक से गैर सवर्ण जातियों के इर्द-गिर्द घूमती आई है. खास तौर पर पिछड़ा वर्ग का प्रभुत्व इतना बढ़ा कि इस तबके से आने वाले लालू यादव, राबड़ी देवी और नीतीश कुमार ही मुख्यमंत्री होते आए हैं. हालांकि एक दौर वह भी रहा है, जब सीएम अगड़ी जातियों के ही होते थे. 90 के दशक में जब मंडल-कमंडल की राजनीति ने अपने पांव फैलाए, तो देश के तमाम दूसरे राज्यों की तरह बिहार की सियासत का नक्शा भी बदल गया. लेकिन हाल के दिनों में, खास तौर पर 2020 के विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद बिहार की राजनीति में एक बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है.

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए में भाजपा, जदयू, लोजपा (रा), रालोमो और हम पार्टी हैं. सरकार की कमान जदयू के प्रमुख नीतीश कुमार के हाथों में है. एनडीए के घटक दलों में यदि भाजपा को छोड़ दें तो जदयू, लोजपा (रा), रालोमो और हम पार्टी का आधार

वोट ही गैर सवर्ण है. हालांकि दिखावे के तौर पर इन दलों ने सवर्ण चेहरों को आगे कर रखा है. उदाहरण के तौर पर कुर्मी-कोइरी आधार मतों वाली पार्टी जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष राज्यसभा सांसद संजय कुमार झा हैं. दलितों के मतों पर राजनीति करने वाली लोजपा (रा) के बिहार प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी हैं. इसी तरह रालोमो और हम पार्टी की कार्यसमिति में सवर्णों की अच्छी संख्या है. दिलचस्प बात ये है कि अधिक संख्या वाले गैर अगड़ी मतदाताओं को लुभाने के लिए इन दलों द्वारा लगातार अभियान चलाया जा रहा है. हालांकि जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद अगड़ी जाति को अनदेखी करने की बात को यह कहते हुए खारिज करते हैं कि बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने देश में पहली बार उच्च जाति के लोगों के विकास के लिए सवर्ण आयोग का गठन किया है. उन्होंने कहा कि सरकार सबको साथ लेकर चल रही है. राजीव रंजन प्रसाद का मानना है कि जदयू में हर जाति-धर्म के लोगों की बराबर की हिस्सेदारी है. उन्होंने कहा कि राजग के अन्य घटक दलों भाजपा, लोजपा (रा), रालोमो व हम पार्टी में भी हर जाति-बिरादरी के लोगों को बराबर का महत्त्व दिया जा रहा है. भाजपा के बिहार प्रदेश प्रवक्ता मनोज शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समाज को सिर्फ चार वर्गों में विभक्त किया है- किसान, नारी, युवा और गरीब. भाजपा की अवधारणा सिर्फ यही है. भाजपा सर्वजन की पार्टी है. सबको साथ लेकर चलती है. इधर, पार्टी की नीतिगत कदमों की बकालत करने वाले मनोज शर्मा अब जन सुराज पार्टी में शामिल हो गए हैं.

बिहार में महागठबंधन में राजद, कांग्रेस, भाकपा, माकपा, भाकपा (माले) और वीआइपी हैं. यहां भी कमोबेश एनडीए वाली स्थिति ही है. राजद ने बिहार में हाल ही में अति पिछड़ी जाति के बुजुर्ग समाजवादी नेता पर्व मंत्री मंगनीलाल मंडल को प्रदेश अध्यक्ष बनाया है. बिहार में कांग्रेस की कमान भी दलित नेता व विधायक राजेश कुमार राम के हाथों में है. वाम दलों के बारे में सबको पता है कि उनका ध्यान गैर सवर्णों पर ही ज्यादा रहता है. मुकेश सहनी वाली वीआइपी भी पूरी तरह से गैर अगड़ी की ही राजनीति करती है. महागठबंधन के घटक दलों के नेता लगातार बिहार में चुनावी अभियान को अंजाम दे रहे हैं. इस अभियान को यदि आप बारीकी से देखेंगे तो इसमें गैर अगड़ी जाति की प्रमुखता की झलक दिख जाएगी. नब्बे के दशक के बाद बिहार में लालू प्रसाद के सामाजिक न्याय क्रांति के प्रादुर्भाव का असर तो हुआ है, लेकिन अब भी राज्य की सामाजिक संरचना वैसी नहीं है कि सवर्णों को नजरअंदाज किया जा सके. राज्य के अधिकांश इलाकों में यह देखने को मिलता है कि जिधर अगड़ी जाति के लोग जाते हैं, उनके पीछे ही अन्य बिरादरी के लोग चलते हैं.

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए में भाजपा, जदयू, लोजपा (रा), रालोमो और हम पार्टी हैं. सरकार की कमान जदयू के प्रमुख नीतीश कुमार के हाथों में है. एनडीए के घटक दलों में यदि भाजपा को छोड़ दें तो जदयू, लोजपा (रा), रालोमो और हम पार्टी का आधार वोट ही गैर सवर्ण है. हालांकि दिखावे के तौर पर इन दलों ने सवर्ण चेहरों को आगे कर रखा है. उदाहरण के तौर पर कुर्मी-कोइरी आधार मतों वाली पार्टी जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष राज्यसभा सांसद संजय कुमार झा हैं.

महागठबंधन में अगड़ी जाति की कथित उपेक्षा की बात पर राजद के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रोफेसर नवल किशोर कहते हैं कि पार्टी प्रमुख लालू प्रसाद सामाजिक न्याय के पुरोधा हैं, इसमें कोई शक नहीं है. पर, इसका मतलब यही नहीं अन्य वर्ग की उपेक्षा हो. उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन के सभी घटक दलों में हर जाति-बिरादरी के लोगों की पर्याप्त संख्या है. किसी को यह शिकायत का मौका नहीं है कि उसकी जाति के लोगों की संख्या कम है. उन्होंने कहा कि राजद और महागठबंधन की रीति-नीति सबको साथ लेकर चलने की रही है. गठबंधन उसी पर कायम है. वहीं दूसरी ओर कांग्रेस के बिहार प्रदेश अध्यक्ष राजेश कुमार राम ने कहा कि इतिहास गवाह है कि कांग्रेस ने हमेशा से सबके लिए काम किया है. कांग्रेस की राजनीति में भेदभाव जैसा कोई शब्द ही नहीं है. पार्टी के नेता, कार्यकर्ता और पदाधिकारी जात-पात की बात नहीं करते हैं. कांग्रेस का तो पुराना नारा रहा है-ह्यजात पर न पात पर, मुहर लगेगा हाथ पर. राजेश राम ने कहा कि बिहार में पार्टी के कार्यकर्ता सभी को साथ लेकर चल रहे हैं और सबको बराबर की जिम्मेदारी दी जा रही है. कांग्रेस से किसी भी जाति-बिरादरी के लोगों की शिकायत नहीं है.

बिहार में अगड़ी जाति की तादाद लगभग 16% है. इनमें भूमिहार, राजपूत, ब्राह्मण और कायस्थ शामिल हैं. हालांकि पिछड़े-अति पिछड़े और दलित वोट बैंक की तुलना में बिहार में अगड़ी जाति की संख्या काफी कम है लेकिन समाज में इनका दबदबा है, जिस वजह से राजनीतिक तौर पर सवर्ण बेहद प्रभावशाली वोट बैंक है. अगड़ी जाति से आने वाले मतदाता शुरूआती दौर से अग्रेसिव होकर मतदान में हिस्सा लेते हैं. राजनीतिक गलियारों में उन्हें सांकेतिक भाषा में 'भूराबाल' कहा जाता है. बिल्कुल वैसे ही जैसे मुस्लिम-यादव समीकरण को 'एमवाई' कहते हैं. नब्बे के दशक में जब बिहार की राजनीति में लालू युग शुरू हुआ, तो उनको लेकर बड़ा राजनीतिक विवाद खड़ा हुआ था. कहा यह गया कि लालू यादव ने बिहार की राजनीति में 'भूराबाल' को साफ करने की बात कही है. हालांकि लालू यादव इसे अपने खिलाफ

एक बड़ी राजनीतिक साजिश बताते रहे हैं. उन्होंने कई मौकों पर कहा कि उन्होंने ऐसा कोई बयान नहीं दिया था. खैर, सच्चाई जो भी रही हो, लेकिन इस विवाद के बाद वहां लालू यादव की छवि 'एंटी अपर कास्ट' नेता के रूप में उभरी. लालू यादव ने भी इसकी परवाह किए बिना यादव, मुस्लिम और अति पिछड़ा वर्ग-दलित वर्ग की कुछ अन्य जातियों को गोलबंद कर अपने को मजबूत बनाए रखा.

बिहार में अगड़ी जातियों की आबादी 16 प्रतिशत के करीब है. एक वक्त यह कांग्रेस का वोट बैंक हुआ करती थीं, लेकिन बाद में भाजपा के साथ आई. नीतीश कुमार के भाजपा के साथ गठबंधन में होने की वजह से इनका समर्थन जदयू को मिलता रहा है. लेकिन 2020 के चुनाव में यह देखा गया कि सवर्ण जातियों ने भाजपा को तो वोट किया, लेकिन जदयू को नहीं. यही वजह रही कि जदयू को पहली बार भाजपा से कम सीट मिलीं और राज्य विधानसभा में सीटों की संख्या के क्रम में तीसरे पायदान पर पहुंच गयी. राजनीति में बिना मकसद कुछ भी नहीं होता. अगर बिहार में अगड़ी जातियों की पूछ बढ़ गई है, तो उसकी वजह भी है. बिहार में जिस तरह से भाजपा तनकर खड़ी हुई है और जीतनराम मांझी, मुकेश सहनी जैसे अपनी-अपनी जातियों के नेताओं का प्रभाव बढ़ना शुरू हुआ है, उसमें राजद को लगने लगा है कि 'एमवाई' समीकरण के सहारे राज्य की सत्ता में वापसी मुश्किल है. तेजस्वी यादव ने पिछले चुनाव के मौके पर कहा भी था कि अब हम 'एमवाई' की पार्टी नहीं बल्कि ए टू जेड की पार्टी होंगे. इसी कोशिश में वह अगड़ी जातियों के साथ अपनी दोस्ती बढ़ा रहे हैं. साल 2022 के मार्च महीने में स्थानीय निकाय चुनाव में प्रत्याशियों के चयन में यह बात साफ दिखी भी थी. बिहार के सियासी गलियारों में यह कहा भी जाने लगा है कि लालू यादव जिस 'भूराबाल' को साफ करने की बात करते थे, तेजस्वी यादव उसी 'भूराबाल' को साथ लेकर चलने की बात करने लगे हैं.

उधर, 2020 के चुनावी नतीजों से झटका खाए नीतीश कुमार को लगता है कि अगर वह खुद अपने पांव पर नहीं खड़े हुए और भाजपा ने अपनी बैसाखी छीन ली, तो फिर उनके सियासी लड़ाई मुश्किल हो जाएगी. अपने पांव पर खड़े होने की कवायद में ही वह अगड़ी जातियों में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश में हैं. राज्य में पिछड़ा वर्ग की नुमाइंदगी करने वाले राजद और जदयू, दोनों को अब यह अहसास हो चला है कि अगड़ी जातियों का साथ लेकर ही वे अपने वोट बैंक का विस्तार कर सकते हैं. तभी तो पिछले दो महीने के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एनडीए में शामिल विभिन्न पार्टी के कार्यकताओं को डेढ़ दर्जन से अधिक आयोगों में पदाधिकारी से लेकर सदस्य तक नियुक्त कर चुके हैं. इसमें अपने के साथ-साथ एनडीए में शामिल दलों के हितों का ख्याल रखा गया है. उसी हिसाब से जातीय समीकरण को भी साधने की भरपूर कोशिश की गई है.

राजनीति में अनिश चितता तो रहती है, लेकिन बिहार में भाजपा ने यह स्पष्ट कर दिया है कि एनडीए विधानसभा का चुनाव नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही लड़ेगा. पिछले विधानसभा चुनाव में 243 सीटों की विधानसभा में भाजपा 110 सीटों पर और जदयू 115 सीटों पर चुनाव लड़ी थी. इस बार सीटों के बंटवारे को लेकर रस्साकशी और सौदेबाजी देखने को मिल सकती है क्योंकि पिछली बार जदयू मात्र 43 सीटों जीत पाई थी.

इससे स्पष्ट है कि पिछली बार जदयू का प्रदर्शन बेहद कमजोर रहा था. इसके बावजूद नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री इसलिए बनाया गया क्योंकि उनके पास दूसरा विकल्प मौजूद है. इस समय जदयू और राजद के रिश्ते खराब हैं. ऐसे में भाजपा और जदयू एनडीए गठबंधन के तहत चुनाव मैदान में होंगे, फिलहाल यही दिखाई पड रही है. नीतीश कुमार की साख अब पहले जैसे नहीं रही. उनकी राजनीतिक निष्ठा पासे की तरह पलटती रही है. इसका नुकसान हुआ है. वहीं उनके खराब स्वास्थ्य और सरकार की कार्यशैली के कारण उनके प्रति विश्वास में कमी आई है, लेकिन यह भी स्थिति नहीं आई कि भाजपा उनसे पल्ला झाड़कर अकेले चुनाव लड़ ले.

फिलहाल भाजपा अभी आश्वस्त नहीं है कि वह अकेले चुनाव लड़कर चुनाव जीत सकती है. मुझे लगता है कि भाजपा अगर अकेले चुनाव लड़ेगी तो शायद भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरेगी लेकिन इतनी हैसियत नहीं है कि अकेले सरकार बना लें. ऐसे में नीतीश कुमार को चुनाव तक साथ रखना लाजमी है. नीतीश कुमार को लेकर भाजपा नेताओं में बेचैनी बहुत है. चुनाव के बाद यह बेचैनी और भी दिखाई देगी. चुनाव में सीट जीतने का अनुपात अगर पिछली बार की तरह ही रहा तो इस बार बिहार में महाराष्ट्र जैसी राजनीति देखने को मिल सकती है. नीतीश कुमार अब 74 साल के हो गए हैं. उम्र के साथ उनके स्वास्थ्य को लेकर दिक्कतें सामने आई हैं. ऐसे में उनके नेतृत्व को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं?. नीतीश कुमार के स्वास्थ्य को लेकर पूरी की पूरी राजनीति तैयार की जा रही है. साल 2005 में जब नीतीश ने सत्ता संभाली थी तो यह कहा जाता था कि बहुत अच्छे शब्द बोलने वाले व्यक्ति के पास सत्ता आई है. इससे इतर पिछले दिनों में उनका भाषण देखें, उनका स्टाइल देखें, वह कैसे गुस्सा हो जा रहे हैं. सभी महसूस कर रहे हैं कि उनका स्वास्थ्य अब अच्छा नहीं है. नीतीश कुमार ने अपने बाद दूसरी पंक्ति का कोई नेता उभरने नहीं दिया और करीब ढाई दशक से पूरी जदयू उनके ही इर्द गिर्द घूम रही है.

वैसे, जदयू में दूसरी पंक्ति में अब निशांत कुमार को आगे किया जा रहा है. सवाल यह है कि 44 साल की उम्र पार कर रहा व्यक्ति क्या राजनीतिक विरासत को संभाल पाएगा?. नीतीश कुमार के पास 14 प्रतिशत वोट है और भाजपा भी इस बात को मानती है. यह वजह है कि नीतीश कुमार जिस तरफ जाते हैं, जीत उसी की होती है. नीतीश कुमार के बाद जदयू का अस्तित्व मुश्किल में लगता है. उन्होंने अपने बेटे को राजनीति में उस तरह से नहीं बड़ाई, जिस तरह से बाल ठाकरे ने किया था. वहां यह बात स्पष्ट थी कि उद्धव ठाकरे को बाल ठाकरे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर रहे हैं. नीतीश की राजनीति उन्हीं पर केंद्रित है. उनके बेटे निशांत कुमार ने सक्रिय राजनीति में भाग नहीं लिया है. ऐसे में उनके पास ज्यादा अवसर नहीं है. जदयू कार्यकताओं की पार्टी नहीं, जातिगत आधार पर खड़ी पार्टी है. ऐसे में नीतीश कुमार के बाद जदयू का क्या भविष्य होगा, कुछ भी कहा नहीं जा सकता है. एक समय था जब नीतीश ने जातिगत आधार पर उपेंद्र कुशवाहा को आगे बढ़ाया लेकिन फिर आगे जाने नहीं दिया. प्रशांत किशोर भी एक समय नीतीश के बहुत करीबी थे लेकिन उनके करीब जो भी रहा है वह ज्यादा समय तक उनके साथ नहीं रहा. बिहार की राजनीति में यह भी चर्चा होती है कि जो नेता जदयू में नीतीश के बहुत करीब हैं. वह भाजपा के भी उतने की करीब हैं.

आसन्न विधानसभा चुनाव में नेतृत्व नीतीश कुमार के हाथ में रहेगा, लेकिन अगर मान लें कि न रहे तो क्या होगा? इससे अति पिछड़ा वर्ग का वोट टूटेगा. यह राजद से टूटकर जदयू में आया है तो इसका बड़ा हिस्सा भाजपा में जाएगा और छोटा हिस्सा राजद के पक्ष में जा सकता है.

कांग्रेस को इसका कोई फायदा होते हुए दिखाई नहीं देता है. बिहार में 15 साल सरकार के बाद भी राजद का वोट प्रतिशत 26 से 27 के बीच बना हुआ है. अति पिछड़ा वर्ग काफी जद्दोजहद के बाद जदयू के साथ गया है. राजद में अति पिछड़ा वर्ग की वापसी के लिए तेजस्वी को अखिलेश यादव की तरह राजनीतिक संकेत देने होंगे. अखिलेश यादव ने पिछले लोकसभा चुनाव में अपने परिवार के पांच लोगों को छोड़कर गैर यादव पिछड़े वर्ग को टिकट दिया था. परिणामस्वरूप लोकसभा में वह 37 सीटों पर चुनाव जीते. तेजस्वी यादव को टिकट बंटवारे में सकारात्मक संकेत देने पड़ेंगे. उन्हें प्रतिनिधित्व देना पड़ेगा और फिर वह लौटकर न आएं इसकी कोई वजह नहीं है, लेकिन यह आसान भी नहीं है.

अभी भाजपा के प्रदेश परिषद की बैठक हुई थी. इसमें किसी ने भी नहीं कहा कि भाजपा बिहार में अकेले सरकार बनाने की इच्छा रखती है. पहले की बैठकों में स्थिति अलग थी. देखा जाए तो भाजपा ने अपना एक कदम पीछे हटा लिया है. मंत्रिपरिषद विस्तार में भाजपा ने अपने वोट बैंक सवर्ण, वैश्य को साधते हुए कुर्मी, कोइरी सहित अति पिछड़ों को भी साधा है. भाजपा रणनीतिक तौर पर कल्याणकारी योजनाओं से अति पिछड़ा वर्ग के करीब जा रही है तो जदयू की मुख्य वोटर महिलाओं में भी पैठ बढ़ा रही है. भाजपा बहुत संभल कर राजनीति कर रही है जिससे नीतीश कुमार दूर भी न जाएं और वह अपने पैरों पर खड़ी भी हो जाए. भाजपा में हमेशा महत्वाकांक्षा रही है कि उन्हें अपने दम पर उनकी सरकार बनें. बिहार में नीतीश कुमार भाजपा की जरूरत हैं. उनके बिना भाजपा चुनाव नहीं जीत सकती है. इस चुनाव में भी उनकी जरूरत पड़ेगी. दोनों ही इस रिश्ते से खुश नहीं हैं लेकिन इसे निभाया जा रहा है. साल 2010 में भी भाजपा की कार्यकारिणी के समय नरेंद्र मोदी को लेकर एक विवाद भी हो गया था. इसके कारण दोनों नेताओं का डिनर भी रद्द हो गया था. भाजपा का काडर बिहार में उतना मजबूत नहीं है और न ही कोई ऐसा जन नेता उभरा जो पार्टी का संपूर्ण नेतृत्व संभाल सके. यही वजह है कि साल 2013 में जब नीतीश कुमार ने गठबंधन बदलकर राजद में गए और फिर भाजपा में आए तो भी भाजपा ने उनका स्वागत किया. भाजपा के अभी दो उपमुख्यमंत्री और 21 मंत्री हैं, वहीं जदयू के 13 मंत्री हैं.

पिछली बार जदयू की 43 सीट आई थी और भाजपा को 74 सीट आई थी. साल 2022 में वीआईपी से जीते चार विधायक भाजपा में शामिल हो गए. यह अंतर बढ़ता जा रहा है और निश्चित रूप से भाजपा जदयू के स्पेस को कम करने की कोशिश कर रही है. हाल ही में हुई दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा ने करीब तीन दशक बाद राज्य में विधानसभा चुनाव जीता है. अब देश में बिहार में ही एकमात्र विधानसभा चुनाव होने हैं, तो क्या दिल्ली का असर बिहार के चुनावों में दिख सकता है? दिल्ली के चुनाव से केंद्र सरकार पर कोई असर नहीं पड़ रहा था क्योंकि भाजपा का सीधा मुकाबला आम आदमी पार्टी से था. वहीं बिहार चुनाव का संबंध केंद्र सरकार के स्थायित्व से है इसलिए जरूरी है कि नीतीश कुमार को साथ लेकर चलें. बिहार में भाजपा अन्य राज्यों की तरह सहयोगी दलों को पीछे छोड़कर आगे नहीं बढ़ पा रही है. इसका कारण उनके अंदर की राजनीति और समीकरण की दिक्कत है. मंडल कमीशन के बाद यह जरूरी हो गया है कि पिछड़े समुदाय के नेताओं को आगे लेकर आएं. बिहार में सम्राट चौधरी को आगे लाकर इसकी शुरूआत की गई है. भाजपा उस रास्ते पर चल पड़ी है लेकिन अगर इसके लिए दस कदम चलने हैं तो मुझे लगता है कि भाजपा तीन या चार कदम आगे बढ़ी है. इस चुनाव में भाजपा उतनी बड़ी पार्टी नहीं बन सकती है लेकिन जनता उसकी तरफ देख रही है. भाजपा को अभी समय लगेगा. कांग्रेस जिस राह पर चल पड़ी है उसमें यूपी, बिहार ही नहीं पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडू और दिल्ली में संकट नहीं महासंकट है. ऐसे राज्यों की संख्या बढ़ती जा रही है. बिहार में इस बार कांग्रेस के अस्तित्व की लड़ाई है. बिहार में वह महागठबंधन में शामिल है तो सवाल है कि उन्हें सीटें कितनी मिलेंगी. राजद की तरफ से इसका जिक्र बार बार किया जा रहा है. पिछली बार 70 सीटों में से कांग्रेस ने सिर्फ 19 सीटें जीती थी. अगर कांग्रेस का स्ट्राइक रेट थोड़ा भी अच्छा होता तो आज सत्ता में राजद होता न की वो. महागठंबंधन के लिए यही अच्छा है कि जितनी जल्दी हो सके सीटों का बंटवारा करके सार्वजनिक घोषणा करें क्योंकि जनमानस में धारणा बहुत मायने रखती है.

अभी भाजपा के प्रदेश परिषद की बैठक हुई थी. इसमें किसी ने भी नहीं कहा कि भाजपा बिहार में अकेले सरकार बनाने की इच्छा रखती है. पहले की बैठकों में स्थिति अलग थी. देखा जाए तो भाजपा ने अपना एक कदम पीछे हटा लिया है. मंत्रिपरिषद विस्तार में भाजपा ने अपने वोट बैंक सवर्ण, वैश्य को साधते हुए कुर्मी, कोइरी सहित अति पिछड़ों को भी साधा है. भाजपा रणनीतिक तौर पर कल्याणकारी योजनाओं से अति पिछड़ा वर्ग के करीब जा रही है तो जदयू की मुख्य वोटर महिलाओं में भी पैठ बढ़ा रही है.

दिल्ली विधानसभा चुनाव के बाद कांग्रेस ने कृष्ण अल्लावारु को बिहार का नया प्रभारी बनाया है. कुछ दिनों पहले अल्का लांबा समेत आधा दर्जन से अधिक बड़े कांग्रेसी नेताओं आगमन यहां हुए हैं. यह पहला मौका है जब जनवरी से लेकर अब तक आधा दर्जन से अधिक प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने बिहार आएं हैं लेकिन बड़ी बात यह है कि उनके आने की खबर कई बार कांग्रेस पार्टी को ही नहीं थी, नहीं तो बाद में सूचित किए गये. हालांकि, इस समय कांग्रेस महागठबंधन में काफी आक्रामक नजर आ रही है. कांग्रेस के विधायक अजीत शर्मा ने कुछ दिन पहले बयान दिया था कि कांग्रेस अब "बी" नहीं "ए" पार्टी बनकर रहेगी. प्रभारी कृष्ण अल्लावारु भी बहुत सधे हुए शब्दों में आक्रामक दिखने की कोशिश कर रहे हैं. राजद ने अभी तक कुछ कहा नहीं है लेकिन कांग्रेस की सीटें कम करने और सीपीआईएमएल की सीट बढ़ाने की चर्चा है. पिछले चुनाव में सीपीआईएमएल को 19 में से 12 सीटों पर जीत मिली थी.

ऐसे में कांग्रेस और राजद के बीच चुनाव तक उठापटक बढ़ने की आशंका है. बिहार की राजनीति जातियों पर आधारित है. छोटी पार्टियों के नेताओं की एक विशेष जाति पर पूरी पकड़ है. जैसे चिराग पासवान का एक अपना वोट बैंक है. जीतन राम मांझी का एक अलग वोट बैंक है. इनके जातिगत वोट बैंक को हासिल करने के लिए गठबंधन की जरूरत है. तेजस्वी यादव इस चुनाव में अखिलेश यादव से कुछ सीखेंगे. कांग्रेस को ज्यादा सीटें देने के बजाय अगर अपनी सीटों पर प्रत्याशी उतारते हैं तो उन्हें ज्यादा फायदा होगा. भाजपा अपना फुटप्रिंट बनाने की कोशिश कर रही है. चिराग पासवान को वो जितनी सीटें पहले देते आ रहे हैं उतनी ही देंगे. जीतन राम मांझी की भी जहां पकड़ है, वहां सीटें देंगे. बाकी छोटी पार्टियों की भूमिका कुछेक क्षेत्रों के ही है जहां उनकी जातियों का वोट बैंक है.

बिहार चुनाव में इस बार चुनावी रणनीतिकार से राजनीति में कदम रखे प्रशांत किशोर की अगुवाई वाली जन सुराज पार्टी भी एक फैक्टर है. यह कितना बड़ा है इसका पता चुनाव के बाद ही पता चलेगा. हमें उप चुनाव और सामान्य चुनाव में अंतर करके देखने की जरूरत है. जब अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव होंगे तो लोग अपने नुमाइंदे नहीं सरकार चुनेंगे और उस वक़्त अगर ये लगने लगता है कि कोई पार्टी एकदम हाशिए पर है या फिर सरकार बनाने की स्थिति में नहीं तो ऐसे में उनकी तरफ रुझान कम हो जाता है. प्रशांत किशोर कुछ न कुछ नुकसान जरूर करेंगे. वो जितना भी वोट लाएंगे, ज्यादातर राजद और उनके सहयोगी दलों का ही नुकसान होगा. वैसे, एनडीए भी अछूत नहीं रहेगा और उसका भी नुकसान होना तय मानिए.

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ संजय मयूख अजगैबीनाथ धाम से देवघर की कर रहे हैं कांवर यात्रा

बोलबंम सेवा शिविर में जिला संयोजक अनुपम गर्ग ने अंग वस्त्र देकर किया सम्मानित

बोलबम सेवा शिविर में संजय मयूखा के साथ अनुपम गर्ग अपने सहयोगियों के साथ

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ
बांका

सावन के पवित्र महीने में श्रद्धालु उत्तर वाहिनी गंगा अजगैबीनाथ धाम से गंगा जल कांवर में भरकर बैद्यनाथ धाम देवघर में बाबा को जल अर्पित करते हैं। शिव पुराण के अनुसार सावन माह में गंगाजल शिव को अति प्रिय माना जाता है। जिससे भक्तों की हर मनोकामनाएं पूर्ण होती है ।इसी क्रम में भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सह मुख्य सचेतक विधान परिषद डॉ संजय मयूख कावड़ यात्रा पर निकले।

वे अजगैबीनाथ धाम से पवित्र गंगाजल लेकर बाबा बैजनाथ की नगरी देवघर के लिए रवाना हुए ।इस दौरान कमरिया पथ पर बोल बम सेवा शिविर में भाजपा नेता अनुपम गर्ग ने काफी गर्म जोशी से उनका स्वागत किया। स्वागत समारोह के दौरान अनुपम गर्ग ने डॉ मयूख को अंग वस्त्र और पुष्प गुच्छ प्रदान कर उनका सम्मान किया ।इस क्रम में डॉ संजय मयूख ने बताया कि इस कांवर यात्रा का उद्देश्य धार्मिक आस्था के साथ-साथ समाज में भाईचारे और एकता का संदेश देना है ।भाजपा नेता अनुपम गर्ग ने इस दौरान क्षेत्र वासियों से एकजुट होकर सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भागीदारी की अपील की। वहीं डॉ मयूख ने कांवर यात्रा को अपनी आस्था और प्रेरणा का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। इस मौके पर दर्जनों भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अनुपम गर्ग द्वार सम्मान

बाबाधाम की यात्रा पर संजय मयूख के साथ अनुपम गर्ग व अन्य

भोजपुरी सुपर स्टार व सांसद मनोज तिवारी कर रहे हैं गंगा धाम से बाबा धाम की पैदल कांवर यात्रा

भाजपा कार्य समिति के सदस्य अनुपम गर्ग ने अंग वस्त्र देकर किया सम्मानित

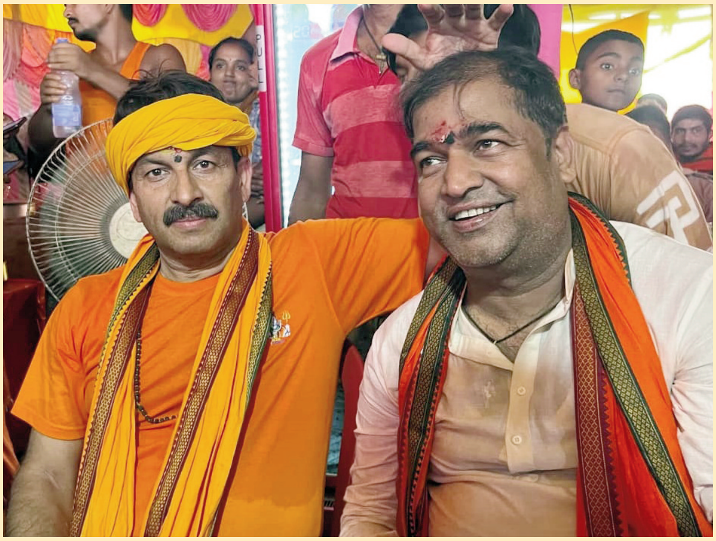

मनोज तिवारी के साथ अनुपम गर्ग (भाजपा कार्य समिति सदस्य)

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ

बांका -भोजपुरी के सुपरस्टार सह भाजपा सांसद मनोज तिवारी सावन के पवित्र महीने में उत्तर वाहिनी गंगा अजगैबीनाथ धाम से जल भरकर बाबाधाम देवघर पांव पैदल कांवर यात्रा कर रहे हैं। इस क्रम में सांसद व भोजपुरी स्टार मनोज तिवारी शुक्रवार को दूसरे दिन धौरी धर्मशाला पहुंचे, जहां भाजपा कार्य समिति के सदस्य अनुपम गर्ग ने उन्हें चादर देकर सम्मानित किया. साथ ही आगे की यात्रा के लिए रवाना किया .इस क्रम में प्रदेश कार्य समिति सदस्य मृगेंद्र सिंह पूर्व मुखिया सुधीर सिंह, पैक्स अध्यक्ष अमरेन्द्र सिंह बबलू ,अजीत सिंह ,बालकृष्ण शर्मा, शेखर सिंह, आदि नेभी सांसद को अंग वस्त्र देकर देकर सम्मानित किया ।यात्रा के क्रम में सांसद ने कहा कि अजगैबीनाथ

सुल्तानगंज में मनोज तिवारी के साथ अनुपम गर्ग कांवर उठाते हुए

धाम और 12 ज्योतिर्लिंग में शामिल बाबा बैजनाथ धाम देवघर की महत्ता इतनी है ।कि देश ही नहीं बल्कि विदेशों के शिव भक्तों का भी आगमन कांवरिया पथ पर होता है। सभी शिव भक्त 105 किलोमीटर की लंबी यात्रा के क्रम में नदी ,जंगल, पहाड़ ,को पार कर भोलेनाथ की शक्ति में लीन होकर बाबा धाम की यात्रा पूरी करते हैं । इस क्रम में बहुत बड़े-बड़े अधिकारी एवं मंत्री नेता भी शिव भक्तों की तरह बाबा नगरी आते हैं सांसद ने कहा कि कांवरिया पथ पर प्रशासनिक व्यवस्था बेहतर है।गेरुआ रंग से समस्त कांवरिया पथ सनातन धर्म का ध्वज आसमान में लहरा रहा है ।सावन महीने में कावड़ यात्रा पर शिव भक्तों का आना बाबा भोलेनाथ के भक्ति के प्रति समर्पण का प्रतीक है मार्ग में पैदल चलने पर कठिनाइयां तो बहुत आती है लेकिन भक्ति भावना के सामने सारी कठिनाइयां दूर हो जाती है जंगली और पहाड़ी रास्ता भी सुगम हो जाता है। सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सरकार का पथ पर व्यवस्था सराहनीय है। लिहाजा इसे राष्ट्रीय मेले का दर्जा मिलना चाहिए ।जहां देशभर के शिव भक्त कांवर लेकर इस पथ से गुजरते हैं। इस मौके पर बांका जिला के कई भाजपा कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

चिराग और सहनी की महत्वाकांक्षाओं से हिल रहा गठबंधन संतुलन

अनूप नारायण सिंह

बिहार की राजनीति में विधानसभा चुनाव 2025 की आहट तेज हो चुकी है और सत्ता के दो मुख्य ध्रुव—एनडीए और महागठबंधन—भीतरी खींचतान और बाहरी दिखावे के बीच संतुलन साधने की कोशिश में उलझे हैं। इस उलझन के दो प्रमुख केंद्र हैं—चिराग पासवान और मुकेश सहनी। दोनों युवा नेता हैं, अपनी-अपनी जातीय आधारभूमि पर पकड़ रखते हैं और अब दोनों को केवल "साझीदार" नहीं बल्कि "निर्णायक" बनने की लालसा है।

एनडीए में भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ा घटक दल है, नंबर दो पर जनता दल यूनाइटेड और फिर तीसरे पायदान पर लोजपा (रामविलास) के चिराग पासवान। इसके बाद जीतन राम मांझी और उपेंद्र कुशवाहा जैसे चेहरे हैं जो अपने-अपने सामाजिक समीकरणों के प्रतिनिधि हैं। लेकिन सीटों के तालमेल में चिराग की मांग—कम से कम 30 सीटें—भाजपा-जदयू की परेशानी का सबब बन गई है। चिराग की इस ऊंची उड़ान के बाद मांझी और कुशवाहा जैसे नेता भी न्यूनतम 15-15 सीट की दावेदारी करने लगे हैं।

भाजपा अपने कोर सीट बैंक से इन सहयोगियों को कितना हिस्सा देगी, यह तो वक्त बताएगा, लेकिन फिलहाल संकेत यही है कि 30-40 सीटों से अधिक का त्याग एनडीए की बड़ी पार्टियों के लिए आसान नहीं। इसका परिणाम है कि अब तक कोई स्पष्ट सीट बंटवारा फॉमूर्ला सामने नहीं आ पाया है। सीटों की यह अनिश्चितता एनडीए के भीतर गहरे असंतोष और अविश्वास को जन्म दे रही है।

दूसरी ओर, महागठबंधन में भी कमोबेश यही स्थिति है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) सबसे बड़ा दल है और तेजस्वी यादव पिछली गलतियों से सबक लेकर इस बार अपने हाथ से सीटें फिसलने नहीं देना चाहते। कांग्रेस को मजबूरी में दूसरा स्थान मिल रहा है जबकि वामदलों को भी सीमित दायरे में समेटने की तैयारी है। मुकेश सहनी, जो महागठबंधन के बाहरी हिस्से की तरह हैं, उनके लिए सीटें बचेंगी या नहीं, यह तेजस्वी के ह्यमूडह्न पर निर्भर है।

सहनी ने पिछली बार एनडीए से समझौता कर सत्ता की साझेदारी का स्वाद चखा था, लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव के पहले उन्हें दरकिनार कर दिया गया। अब वे अपनी जमीन को लेकर पहले से कहीं ज्यादा सचेत हैं। यही कारण है कि खबरें हैं, उन्होंने भी अपने सभी राजनीतिक विकल्पों को खुला रखा है। वे महागठबंधन में रहें या नहीं, यह अब तेजस्वी के सौजन्य पर नहीं, समीकरणों की मजबूरी पर निर्भर करेगा। चिराग पासवान को लेकर राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर की भविष्यवाणियां बिहार की राजनीति में अब इतिहास बन चुकी हैं। लेकिन चिराग खुद को अब "रामविलास के बेटे" के बजाय एक "राजनीतिक ब्रांड" के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। उनकी महत्वाकांक्षा भाजपा के लिए उतनी ही असहज है, जितनी तेजस्वी के लिए मुकेश सहनी की राजनीतिक लचक।

इन दोनों नेताओं की आक्रामक महत्वाकांक्षाएं न सिर्फ उनके-उनके गठबंधनों को अंदर से कमजोर कर रही हैं, बल्कि बिहार में एक तीसरे राजनीतिक विकल्प की गुंजाइश को भी बल दे रही हैं। जनता के बीच इस विकल्प की चर्चा अभी दबे स्वर में हो रही है, लेकिन जैसे-जैसे सीटों का फॉमूर्ला बिगड़ेगा, विकल्प की आवाज और बुलंद होगी।

बिहार की राजनीति अब सिर्फ जाति, धर्म या क्षेत्रीय समीकरणों का खेल नहीं रह गई है। यह अब 'मैं भी मुख्यमंत्री क्यों नहीं' वाली महत्वाकांक्षा का अखाड़ा बनती जा रही है। चिराग और सहनी इस अखाड़े के नए पहलवान हैं, जो गठबंधन की सीमा रेखाओं को लांघ कर अपनी अखाड़ेबाजी की जमीन तलाश रहे हैं।

समय बताएगा कि ये दो युवा नेता अपने-अपने गठबंधन में "किंगमेकर" बनते हैं या अपनी ही महत्वाकांक्षा की बलि चढ़ते हैं। पर एक बात साफ है — 2025 के बिहार चुनाव में गठबंधन से बड़ी चुनौती अब उनके भीतर के महत्त्वाकांक्षी सहयोगी हैं।

जनसेवा का दूसरा अध्याय : करगहर से चुनाव लड़ने की तैयारी में दिनेश कुमार राय से बातचीत

प्रशासनिक सेवा में एक दशक से अधिक वक्त तक अपनी ईमानदारी और कुशलता से पहचान बना चुके आईएएस दिनेश कुमार राय ने हाल ही में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (श्फ्र) लेकर राजनीति में नई पारी शुरू करने की दिशा में कदम बढ़ाया है। पश्चिम चंपारण के डीएम से लेकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के आप्त सचिव तक के सफर में उन्होंने सुशासन के कई मॉडल जमीन पर उतारे। माना जा रहा है कि वे 2025 के विधानसभा चुनाव में जदयू के टिकट पर करगहर विधानसभा से मैदान में उतर सकते हैं।

वरिष्ठ पत्रकार अनूप नारायण सिंह ने उनसे इस परिवर्तन और उनके भविष्य की योजनाओं को लेकर खास बातचीत की।

अनूप नारायण सिंह (प्रश्न): आपने एक प्रतिष्ठित प्रशासनिक सेवा को छोड़कर करगहर जैसे क्षेत्र से चुनावी राजनीति की राह चुनी है। ऐसा निर्णय क्यों?

दिनेश राय (उत्तर): जनसेवा मेरे लिए हमेशा से प्राथमिकता रही है। प्रशासनिक सेवा में रहते हुए मैंने व्यवस्था के भीतर रहकर काम किया, लेकिन अब मुझे लगा कि नीतियों को बनाने और लागू करने दोनों स्तरों पर सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। करगहर मेरा अपना क्षेत्र है, मेरी मिट्टी है। वहाँ के लोगों से आत्मीय जुड़ाव है।

प्रश्न: अफसर से जनप्रतिनिधि बनने की प्रक्रिया में आप खुद को कैसे ढालते हैं?

उत्तर: अफसर रहते हुए सिस्टम को ठीक करने की सीमाएं होती हैं। लेकिन जनप्रतिनिधि बनकर आप नीतिगत बदलाव कर सकते हैं, लोगों की आकांक्षाओं का सीधा प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। मेरे लिए यह सिर्फ भूमिका का बदलाव नहीं, बल्कि सेवा का विस्तार है।

नीतीश जी मेरे मार्गदर्शक हैं। उनके साथ वर्षों तक काम करते हुए मैंने देखा कि शासन को कैसे संवेदनशील और जवाबदेह बनाया जा सकता है। सुशासन की परिभाषा क्या होती है, ये उनसे सीखा। वही प्रेरणा मुझे राजनीति में लेकर आई है।

प्रश्न: क्या आप नीतीश मॉडल को ही राजनीति में आगे बढ़ाएंगे या कुछ नया भी जोड़ेंगे?

उत्तर: नीतीश मॉडल बिहार में सकारात्मक बदलाव की मिसाल है। मैं उसमें नई पीढ़ी की भागीदारी, तकनीक और पारदर्शिता को और मजबूत करना चाहता हूं। मेरे लिए नीतीश जी की नीति और युवाओं की ऊर्जा का समन्वय भविष्य की राह है।

प्रश्न: करगहर में कुर्मी समाज का खासा प्रभाव है और आप भी इसी जाति से आते हैं। क्या यह समीकरण आपकी जीत में निर्णायक होगा?

उत्तर: जातीय समीकरण जरूर भूमिका निभाते हैं, लेकिन मेरे लिए असली ताकत जनता का विश्वास है। मैं सिर्फ कुर्मी समाज नहीं, बल्कि डइउ, दलित, महादलित सभी वर्गों में विश्वास और संवाद स्थापित करने की दिशा में काम कर रहा हूं।

प्रश्न: आपने जदयू का ही विकल्प क्यों चुना?

उत्तर: जदयू की विचारधारा मेरे प्रशासनिक अनुभव और सोच से मेल खाती है। सामाजिक न्याय, विकास और सुशासन—इन तीनों स्तंभों पर जदयू ने लगातार काम किया है। यही कारण है कि मैंने इस मंच को चुना।

प्रश्न: करगहर की बड़ी समस्याएं क्या हैं, और आप उन्हें कैसे सुलझाएंगे?

उत्तर: शिक्षा की गुणवत्ता, कृषि को बाजार से जोड़ना और पलायन रोकना सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। मैं अपने प्रशासनिक अनुभव से योजनाओं को जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से लागू करने का काम करूंगा।

प्रश्न: क्या अफसर रहते हुए आपने महसूस किया कि व्यवस्था में बदलाव जनप्रतिनिधियों के बिना अधूरा है?

उत्तर: बिल्कुल। कई बार योजनाएं बन जाती हैं लेकिन जनप्रतिनिधियों की सक्रियता के अभाव में जमीन पर नहीं उतरतीं। मैंने इसे महसूस किया है और इसलिए अब उस कमी को दूर करने की दिशा में आगे बढ़ रहा हूं।

प्रश्न: आपकी छवि एक ईमानदार अफसर की रही है, राजनीति में इसे कैसे बनाए रखेंगे?

उत्तर: छवि वक्त के साथ नहीं, कार्यों से बनती है। मैंने कभी किसी शॉर्टकट या समझौते का रास्ता नहीं चुना। राजनीति में भी वही मूल्य लेकर चलूंगा—सादगी, जवाबदेही और पारदर्शिता।

प्राश्न: बिहार के युवाओं के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

उत्तर: राजनीति गंदा खेल नहीं है, अगर अच्छे लोग इससे जुड़ें। मैं युवाओं से यही कहना चाहता हूं—अपने समाज, अपने राज्य को बदलने के लिए आगे आइए। आप अफसर बनें, नेता बनें, लेकिन ईमानदारी और जनसेवा का रास्ता कभी न छोड़ें।

भाजपा छोड़ जनसुराज में शामिल हुए मनीष कश्यप चनपटिया से चुनाव लड़ने का किया ऐलान

एनडीए–महागठबंधन पर साधा निशाना, युवाओं की उपेक्षा और विकास के ठहराव को बताया कारण

पटना से अनूप नारायण सिंह की रिपोर्ट

भाजपा से नाता तोड़कर चर्चित यूट्यूबर और सामाजिक कार्यकर्ता मनीष कश्यप ने प्रशांत किशोर के नेतृत्व वाले जनसुराज आंदोलन से जुड़ने की औपचारिक घोषणा कर दी है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी साफ कर दिया कि वे आगामी 2025 बिहार विधानसभा चुनाव। में चनपटिया विधानसभा सीट से चुनाव मैदान में उतरेंगे।भाजपा पर लगाया कार्यकताओं की उपेक्षा का आरोपमनीष कश्यप ने भाजपा से अलग होने का कारण बताते हुए कहा कि पार्टी में जमीनी कार्यकताओं की कोई पूछ नहीं रह गई है। उन्होंने कहा कि

एनडीए और महागठबंधन दोनों पर बोला हमला

कश्यप ने बिहार की वर्तमान राजनीति पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि एनडीए और महागठबंधन दोनों ही गठबंधन युवाओं की अनदेखी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बिहार में लंबे समय से युवा नेतृत्व को उभरने नहीं दिया गया, जिससे राजनीति स्थायी चेहरों के इर्द-गिर्द ही सिमट कर रह गई है।

प्रशांत किशोर के विजन से प्रेरित होकर जनसुराज में शामिल

जनसुराज से जुड़ने को लेकर मनीष कश्यप ने कहा कि वे प्रशांत किशोर के दूरदर्शी विकास मॉडल और ग्राम केंद्रित राजनीति से प्रभावित हैं।

> "प्रशांत किशोर गांव-गांव जाकर लोगों की बात सुन रहे हैं और जनसुनवाई को लोकतंत्र का मूल बना रहे हैं। मैं उनके विजन से प्रभावित होकर जुड़ा हूं।"

चनपटिया को बनाएंगे विकास का मॉडल

मनीष कश्यप ने कहा कि पश्चिम चंपारण का चनपटिया इलाका सीमा से सटा होने के बावजूद विकास की मुख्यधारा से अभी तक जुड़ नहीं पाया है।

> यहां के युवाओं को रोजगार के लिए पलायन करना पड़ता है। मैं चाहता हूं कि

चनपटिया को उद्योग और स्वरोजगार का हब बनाया जाए।ह्व

राजनीति में आने का उद्देश्य सत्ता नहीं, परिवर्तन

राजनीतिक पारी की शुरूआत पर मनीष कश्यप ने स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य सत्ता प्राप्त करना नहीं बल्कि व्यवस्था में परिवर्तन लाना है।

> "मैंने पत्रकारिता के माध्यम से लोगों की समस्याएं उठाईं, अब चाहूं तो उन्हें नीति-निर्माण तक पहुंचाऊं। यही वजह है कि मैं चुनाव लड़ने का निर्णय लिया।"

राजनीतिक हलकों में हलचल

मनीष कश्यप की जनसुराज में एंट्री और चनपटिया से उनके चुनाव लड़ने की घोषणा से राजनीतिक हलकों में हलचल मच गई है। जानकारों का मानना है कि पश्चिम चंपारण की राजनीति में यह नया समीकरण कई परंपरागत दलों की रणनीति को प्रभावित कर सकता है।

मुख्य तथ्य संक्षेप में :

मनीष कश्यप ने भाजपा छोड़ी, जनसुराज से जुड़े

चनपटिया से विधानसभा चुनाव लड़ने का ऐलान

भाजपा में कार्यकताओं की अनदेखी का आरोप

एनडीए और महागठबंधन पर युवा विरोधी रवैये का आरोप

प्रशांत किशोर के विजन को बताया प्रेरणा

चनपटिया को विकास का मॉडल बनाने का दावा

बिहार की राजनीति में मनीष कश्यप की एंट्री को युवा मतदाताओं के रुख से जोड़कर देखा जा रहा है। आने वाले दिनों में जनसुराज की रणनीति और भाजपा की प्रतिक्रिया इस पूरे घटनाक्रम को और दिशा दे सकती है।

ईमानदारी की नई मिसाल

राजनीति में सुशासन की दस्तक

आईएएस दिनेश कुमार राय ने लिया वीआरएस, करगहर से चुनावी पारी की अटकलें तेज

नीतीश कुमार के करीबी और भरोसेमंद अधिकारी रहे हैं राय, जनता के बीच लोकप्रियता चरम पर

पटना। बिहार की प्रशासनिक सेवा से एक बड़ा और प्रतीकात्मक संदेश उस समय सामने आया, जब 2010 बैच के चर्चित आईएएस अधिकारी दिनेश कुमार राय ने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (श्फ्र) लेने का निर्णय लिया। एक ऐसा अधिकारी जिसने अपने पूरे कार्यकाल में ईमानदारी, पारदर्शिता और संवेदनशीलता की मिसाल कायम की, अब जनसेवा की नई दिशा में कदम रखने की ओर अग्रसर दिखाई दे रहे हैं। वर्तमान में राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग में पदस्थापित राय का यह फैसला, बिहार की राजनीति में बदलाव की आहट के रूप में देखा जा रहा है।दिनेश कुमार राय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेहद करीबी और विश्वासपात्र अधिकारियों में गिने जाते रहे हैं। वे वर्षों तक मुख्यमंत्री के निजी सचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं और सुशासन, सामाजिक न्याय और जनकल्याण की नीतियों को नजदीक से देखने और लागू करने का अनुभव रखते हैं। उन्होंने प्रशासनिक सेवा के दौरान न केवल योजनाओं का क्रियान्वयन किया, बल्कि नीतीश मॉडल को जमीन पर उतारने का कार्य भी किया।ईमानदारी और प्रशासनिक कुशलता के प्रतीक राय की छवि एक ईमानदार, सुलभ और जनहित में काम करने वाले अफसर की रही है। पश्चिम चंपारण के जिलाधिकारी रहते हुए उन्होंने बाढ़ राहत कार्यों की निगरानी, भूमि विवादों के त्वरित समाधान और प्रशासनिक पारदर्शिता के नए मानक स्थापित किए। आम जनता से सीधा संवाद और शिकायतों के प्रति तत्परता ने उन्हें "जनप्रिय अफसर" बना दिया। उनके कार्यकाल को आज भी बेतिया सहित विभिन्न जिलों में मिसाल के तौर पर याद किया जाता है।

करगहर से चुनावी पारी की चर्चा जोरों पर।हाल ही में करगहर विधानसभा क्षेत्र में दिनेश कुमार राय के स्वागत में आयोजित समारोहों और जनसंवाद कार्यक्रमों ने साफ संकेत दिया है कि वे आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में चुनावी मैदान में उतर सकते हैं। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि वे जनता दल (यू) के टिकट पर करगहर से उम्मीदवार बन सकते हैं। हालांकि उन्होंने अभी तक सार्वजनिक रूप से राजनीतिक पारी की घोषणा नहीं की है, परंतु उनके नजदीकी सूत्र मानते हैं कि यह अब सिर्फ औपचारिकता भर रह गई है।सामाजिक और जातीय समीकरणों में सटीक बैठाव।करगहर विधानसभा क्षेत्र में कुर्मी जाति की अहम भूमिका है और श्री राय इसी जाति से आते हैं। यह जातीय समीकरण उन्हें सशक्त जनाधार प्रदान करता है। इसके अलावा क्षेत्र में डइउ, दलित और महादलित वर्ग में भी उनकी गहरी स्वीकार्यता और लोकप्रियता है। ऐसे में वे सामाजिक रूप से भी उस क्षेत्र के लिए पूरी तरह फिट और प्रभावशाली विकल्प माने जा रहे हैं।युवाओं के लिए आदर्श, हर घर में बन चुके हैं प्रेरणा।राय की ईमानदार और सादगीपूर्ण छवि ने उन्हें सिर्फ अफसर नहीं, बल्कि युवाओं के लिए एक आदर्श व्यक्तित्व बना दिया है। करगहर ही नहीं, पूरे बिहार में लोग अपने बच्चों को यह कहते पाए जा रहे हैं—ह्लदिनेश राय जैसा अफसर बनो, जो ईमानदार भी हो और जनता के लिए समर्पित भी।ह्व यह वही भावना है जो आज के राजनेताओं में अक्सर लुप्त होती जा रही है।राजनीतिक बदलाव का वाहक बन सकते हैं राय।अगर दिनेश कुमार राय राजनीति में उतरते हैं, तो वे परंपरागत राजनीति के विरुद्ध एक नयी सोच और साफ-सुथरी छवि का प्रतिनिधित्व करेंगे। एक ऐसा नेतृत्व, जो व्यवस्था के भीतर से निकलकर व्यवस्था को बदलने का सपना लिए हुए सामने आ रहा है।श्री राय का वीआरएस लेना केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि बिहार की बदलती राजनीतिक चेतना का प्रतीक बन चुका है। करगहर की जनता को अब एक ऐसा चेहरा नजर आ रहा है जो केवल वादे नहीं, बल्कि प्रशासनिक अनुभव और सिद्धांतों के साथ जनसेवा की भावना लेकर आ रहा है। अब सबकी निगाहें इस पर टिकी हैं कि वे कब अपनी राजनीतिक पारी की औपचारिक घोषणा करते हैं। लेकिन इतना तय है कि अगर वे चुनावी मैदान में उतरते हैं, तो यह मुकाबला परिवर्तन और पारदर्शिता की नयी लड़ाई में बदल जाएगा।

चुनावी पड़ताल अमनौर विधानसभा

क्या इस बार भी अमनौर भाजपा के मंटू सिंह पटेल को जिताएगा? या सुनील राय की सियासी वापसी होगी? जन सुराज क्या तीसरी ताकत बनकर उभरेगा?

बिहार की राजनीति में कई विधानसभा क्षेत्र हैं जहां जातीय समीकरण, संगठन की ताकत और व्यक्तिगत प्रभाव मिलकर चुनावी तस्वीर तय करते हैं—अमनौर उन्हीं में से एक है। 2025 का चुनाव आते-आते यह सीट फिर चर्चा के केंद्र में है, वजहें कई हैं—टिकट की दावेदारी से लेकर गठबंधन की रणनीति तक और मतदाताओं की खामोशी से लेकर मैदान में उतरे चेहरों तक।

2020: जब आखिरी वक्त पर बदला खेल।2020 का चुनाव मंटू सिंह पटेल के लिए टर्निंग पॉइंट साबित हुआ। जब भाजपा ने ऐन वक्त पर मौजूदा विधायक चोकर बाबा (शत्रुघ्न तिवारी) का टिकट काटकर मंटू सिंह को मैदान में उतारा, तब क्षेत्र में बगावत की आंधी चल पड़ी। चोकर बाबा ने निर्दलीय लड़ाई लड़ी, पर भाजपा-जदयू समर्थकों ने मंटू को जिताया। नतीजाः न सिर्फ जीत मिली बल्कि मंटू सिंह पटेल को बिहार सरकार में आईटी मंत्री बनाया गया। उनके कामकाज और राजनीतिक परिपक्वता ने उन्हें भाजपा के सारण क्षेत्र में एक मजबूत चेहरा बना दिया है।

2025: नई चुनौती, पुराने चेहरे।भाजपा-जदयू गठबंधन एक बार फिर मंटू सिंह पटेल के साथ खड़ा है। पार्टी, संगठन और क्षेत्रीय सांसद राजीव प्रताप रूड़ी का आशीर्वाद भी उनके साथ है। मंटू अब सिर्फ एक विधायक नहीं बल्कि संभावित बड़े नेता के रूप में देखे जा रहे हैं। राजद की तरफ से सस्पेंस बिल्कुल नहीं है। पार्टी ने साफ संकेत दे दिए हैं कि सुनील कुमार राय, जो वर्तमान में सारण जिला अध्यक्ष हैं, वही पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार होंगे। सुनील राय लगातार दो चुनावों से मजबूती से चुनाव लड़ते रहे हैं और इस बार उन्हें संगठन से लेकर जातीय समीकरण तक का साथ मिलने की उम्मीद है।2025 में अमनौर की सियासत में एक और बड़ा नाम जुड़ चुका है—प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज। इस पार्टी ने अमनौर में तीन मजबूत स्थानीय नेताओं को आगे कर मुकाबले को त्रिकोणीय बना दिया हैः चोकर बाबा (शत्रुघ्न तिवारी) - भाजपा से टिकट कटने के बाद अब जन सुराज से उम्मीद लगाए बैठे हैं। भुमिहार वोटों पर पकड़ मजबूत है। प्रिया रंजन सिंह सुमित झ अमनौर के लोकप्रिय राजपूत नेता, पहले निर्दलीय चुनाव लड़ चुके हैं, हाल में कई बड़े सामाजिक कार्यक्रमों की वजह से चर्चा में हैं।

उज्ज्वल कुमार सिंह – जन सुराज के युवा और चर्चित चेहरे, संगठन में पकड़ और जमीनी सक्रियता की वजह से टिकट के प्रबल दावेदार माने जा रहे हैं। लेकिन सवाल बड़ा है—तीनों में से टिकट किसे मिलेगा? अगर दो दावेदार टिकट से वंचित होते हैं, तो क्या वे बगावत करेंगे? और अगर तीनों में से कोई मैदान में निर्दलीय उतरता है, तो भाजपा-राजद दोनों को नुकसान संभव है जातीय समीकरण क्या कहते हैं?

कुर्मी मतदाताः परंपरागत रूप से मंटू सिंह के पक्ष में।

राजपूत वोटरः निर्णायक भूमिका में, खासकर प्रिया रंजन और सुनील राय दोनों की रणनीति इन्हीं पर टिकी है।

भुमिहार समुदायः चोकर बाबा का आधार, अगर निर्दलीय या जन सुराज से उतरते हैं तो समीकरण उलट सकते हैं।

यादव-मुस्लिम मतदाताः राजद के साथ परंपरागत रूप से जुड़े।मंटू सिंह पटेल के लिए यह चुनाव अपनी स्थिति को और मजबूत करने का अवसर है।सुनील राय के लिए यह चुनाव राजद के साइलेंट परफॉर्मर से पावर सेंटर बनने की चुनौती है।जन सुराज के लिए यह चुनाव स्थानीय स्तर पर खुद को तीसरे विकल्प के रूप में स्थापित करने की परीक्षा है।

पर सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या अमनौर की जनता इस बार भी मंटू सिंह पटेल पर भरोसा जताएगी? या चुपचाप किसी बदलाव की जमीन तैयार हो रही है?

आप क्या सोचते हैं? कमेंट में बताएं झ किसे मिले टिकट और क्यों? क्या जन सुराज यहां खेल बिगाड़ सकता है?

करगहर से चुनावी मैदान में उतर सकते हैं पूर्व आईएएस दिनेश राय सीएम नीतीश कुमार के बेहद करीबी अधिकारियों में माने जाते हैं

अनूप नारायण सिंह

पटना/करगहर झ बिहार की राजनीति में 2025 के विधानसभा चुनावों की आहट के बीच करगहर विधानसभा क्षेत्र अचानक सुर्खियों में है। वजह हैं पूर्व आईएएस अधिकारी दिनेश राय, जो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेहद भरोसेमंद और करीबी अधिकारियों में गिने जाते रहे हैं। राय ने हाल ही में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (श्फ्र) लेकर राजनीतिक पारी शुरू करने की तैयारी कर ली है और जदयू के टिकट पर करगहर से चुनाव लड़ने की संभावना प्रबल मानी जा रही है।

दिनेश राय एक कर्मठ, ईमानदार और जनसरोकार से जुड़े अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री के आप्त सचिव के रूप में वर्षों तक काम किया है और शासन तंत्र में उनकी पकड़ और निर्णय क्षमता की प्रशंसा होती रही है। जनता और प्रशासन दोनों के बीच उनकी छवि एक साफ-सुथरे अफसर की रही है। गौरतलब है कि 2020 के विधानसभा चुनावों के दौरान भी उनके नाम की चर्चा करगहर से संभावित उम्मीदवार के रूप में हुई थी, लेकिन तब उन्होंने चुनाव न लड़ने का फैसला किया था। अब, 2025 के चुनाव से पहले उन्होंने वीआरएस लेकर स्पष्ट संकेत दे दिया है कि वे सक्रिय राजनीति में उतरने को तैयार हैं।

विश्वस्त सूत्रों की मानें तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने स्वयं उन्हें चुनावी मैदान में उतरने के लिए प्रोत्साहित किया है। जेडीयू नेतृत्व भी करगहर जैसी महत्वपूर्ण सीट से एक साफ छवि और प्रशासनिक अनुभव वाले चेहरे को उतारने की रणनीति पर काम कर रहा है।

करगहर विधानसभा क्षेत्र में दिनेश राय की पकड़ पहले से ही मजबूत मानी जाती है। वे लंबे समय से सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रिय रहे हैं। उनके आने से क्षेत्र में राजनीतिक समीकरणों में बदलाव के संकेत मिल रहे हैं।

2025 का चुनाव करगहर के लिए कई मायनों में निर्णायक हो सकता है, और दिनेश राय जैसे अफसर का राजनीति में आना प्रदेश की राजनीति में एक नई दिशा का संकेत देता है।

2025 फिर से नीतीश : सुशासन को जन-जन तक पहुंचाने निकले डॉ. राहुल परमार, सोनपुर से हो सकते हैं एनडीए के निर्णायक प्रत्याशी

अनूप नारायण सिंह

बिहार में आगामी विधानसभा चुनावों की आहट के बीच सियासी सरगर्मियां तेज हो गई हैं। इन उठते राजनीतिक तरंगों के बीच जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के प्रदेश सचिव और सोनपुर विधानसभा क्षेत्र के प्रभारी आचार्य डॉ. राहुल परमार राज्य की राजनीति में एक नए विमर्श की बुनियाद रख रहे हैं—नाम है "2025 फिर से नीतीश"। यह केवल एक चुनावी नारा नहीं, बल्कि डॉ. परमार द्वारा चलाया जा रहा एक तथ्यात्मक जनजागरण अभियान है, जो नीतीश कुमार के नेतृत्व में हुए दो दशकों के सुशासन की ठोस तस्वीर जनता के सामने ला रहा है।

किताब से लेकर कदमों तक—सुशासन को पन्नों में समेटते और पंचायतों तक पहुंचाते परमार

डॉ. परमार नीतीश सरकार की उपलब्धियों पर आधारित एक तथ्यपूर्ण और शोधपरक पुस्तक लेकर आ रहे हैं, जो न केवल योजनाओं और नीतियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है, बल्कि लाभार्थियों की जीवनगाथाओं और सरकारी रिपोर्टों के हवाले से बिहार के बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य की गवाही भी देती है। यह पुस्तक किसी भी राजनेता द्वारा लिखी गई पहली ऐसी राजनीतिक दस्तावेज होगी, जो सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन से लेकर प्रभाव तक का निष्पक्ष मूल्यांकन करती है। इस अभियान के तहत वे पूरे प्रदेश में "सुशासन संवाद" कार्यक्रम चला रहे हैं, जहां वे गाँव-गाँव जाकर जनता से संवाद कर रहे हैं, पुस्तक के अंश पढ़ते हैं और नीतीश कुमार की नीतियों को सीधे जनता के अनुभवों से जोड़ते हैं। युवाओं को तथ्य आधारित राजनीति से जोड़ने का उनका प्रयास इस चुनावी मौसम में बेहद उल्लेखनीय माना जा रहा है।

भाजपा ने छोड़ी सोनपुर सीट, जदयू ने मैदान में उतारे अपने ह्ललोकल और लड़ाकूह्व नेता

राजनीतिक समीकरणों की बात करें तो सोनपुर विधानसभा सीट पर एक बड़ा बदलाव सामने आया है। 2015 और 2020 में भाजपा के पास रही इस सीट को इस बार गठबंधन धर्म के तहत जदयू को सौंप दिया गया है। विश्वस्त सूत्रों के अनुसार, जदयू नेतृत्व ने इस सीट से डॉ. राहुल परमार के नाम पर लगभग मुहर लगा दी है। यह कदम भाजपा के ह्लसेफ गेमह्व और जदयू की क्षेत्रीय पकड़ को दशार्ता है।

डॉ. परमार लंबे समय से सोनपुर में संगठन निर्माण में लगे रहे हैं। पंचायत स्तर तक जदयू की पकड़ मजबूत करने, बूथ कार्यकताओं को सक्रिय रखने और युवाओं के बीच संवाद कायम करने में उनकी भूमिका निर्णायक रही है। यही वजह है कि पार्टी उन्हें "लोकल, लोकप्रिय और लड़ाकू" उम्मीदवार के रूप में देख रही है।

विचारशील लेखक, समाजसेवी और जननेता का अद्वितीय मिश्रण

डॉ. राहुल परमार राजनीति में विचार, कार्य और शोध का संगम प्रस्तुत करते हैं। वे न केवल एक कुशल संगठनकर्ता हैं, बल्कि एक विचारशील लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी पहचान रखते हैं। नीतीश सरकार के सुशासन मॉडल पर आधारित उनकी लिखी गई पूर्ववर्ती पुस्तकों को राजनीतिक अध्ययन और

प्रशासनिक शोध में उपयोगी माना गया है।

उनकी कार्यशैली उन्हें अन्य नेताओं से अलग करती है। वे क्षेत्र में जनसंवाद, युवाओं की भागीदारी और महिलाओं के सशक्तिकरण को प्राथमिकता देते रहे हैं। यही वजह है कि सोनपुर की जनता में उनका एक अलग विश्वास और अपनापन बना है।

समीकरण, सोच और सुशासन—तीनों में फिट हैं राहुल परमार

राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो भाजपा द्वारा सोनपुर से पीछे हटना और जदयू का फ्रंटफुट पर आना यह दशार्ता है कि ठऊ्भ इस सीट को हारने का जोखिम नहीं लेना चाहता। आचार्य डॉ. परमार जातीय, सामाजिक और राजनीतिक समीकरणों के लिहाज से पूरी तरह फिट बैठते हैं। वे सिर्फ उम्मीदवार नहीं, बल्कि गठबंधन के लिए एक नीति और नीयत आधारित चेहरा बन सकते हैं। प्रचार से परे, विचार की राजनीति की ओर बढ़ते कदम"2025 फिर से नीतीश" सिर्फ एक प्रचार अभियान नहीं, बल्कि तथ्य, आंकड़े और जमीनी अनुभवों पर आधारित राजनीति का नवसंवाद है। और इस विमर्श के सबसे प्रखर संवाहक बनकर उभरे हैं आचार्य डॉ. राहुल परमार। यदि वे सोनपुर से प्रत्याशी घोषित होते हैं, तो यह न केवल विपक्ष के लिए एक कठिन चुनौती होगी, बल्कि यह संदेश भी देगा कि जदयू अब केवल सत्ता की पार्टी नहीं, बल्कि विचार और कार्य की पार्टी है—जो विकास के पिछले 20 वर्षों की कहानी को आगामी भविष्य की बुनियाद बनाना चाहती है।

सोनपुर की सियासत इस बार इतिहास लिख सकती है—एक ऐसा इतिहास, जिसमें नारे नहीं, काम बोलेंगे।

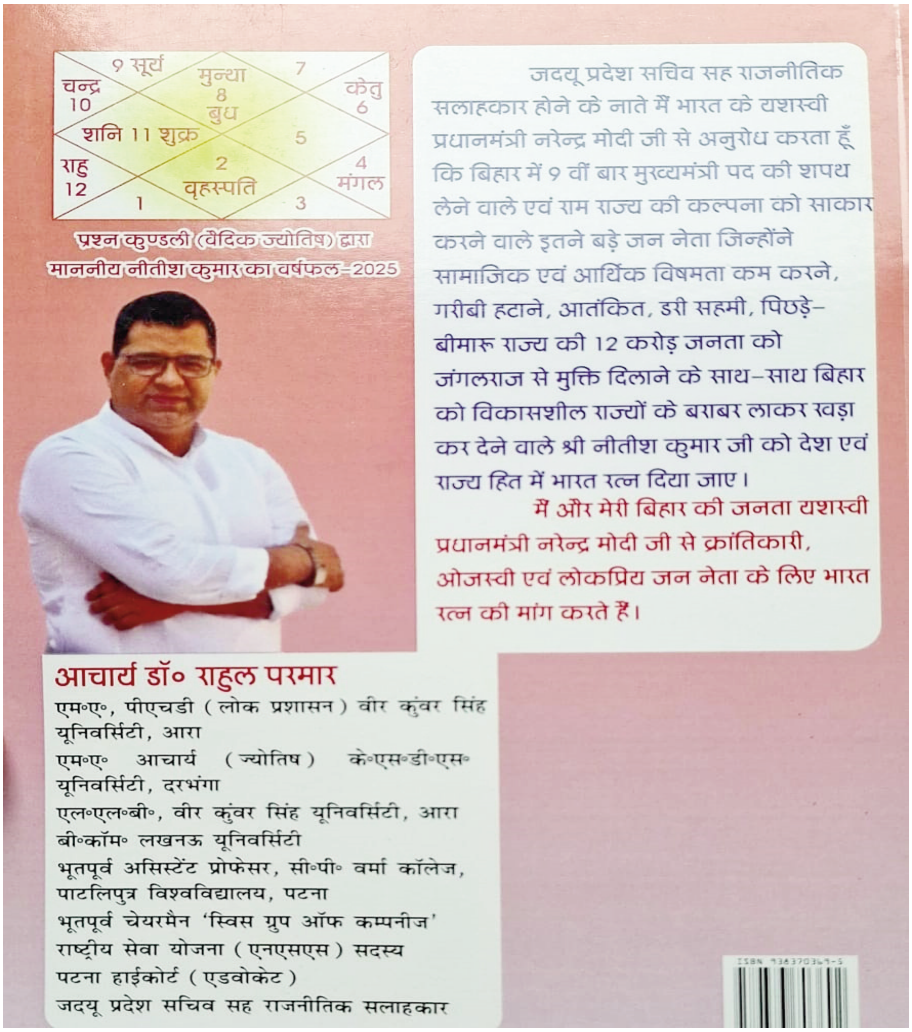

बदलाव की आहट या नेतृत्व से दूरी? विकास वैभव को लेकर सोशल मीडिया पर बहस तेज

आईपीएस से समाजसेवा की राह पर चल रहे विकास वैभव को लेकर राजनीति में आने या न आने की बहस ने पकड़ा जोर

अनूप नारायण सिंह

बिहार कैडर के चर्चित और लोकप्रिय आईपीएस अधिकारी विकास वैभव, जो वर्तमान में बिहार पुलिस में आईजी पद पर कार्यरत हैं, को लेकर सोशल मीडिया पर इन दिनों एक दिलचस्प और व्यापक बहस चल रही है—क्या उन्हें राजनीति में आना चाहिए या नहीं?

जहां एक वर्ग उन्हें बिहार के बदलाव का चेहरा मानकर सक्रिय राजनीति में उतरने का आान कर रहा है, वहीं बड़ी संख्या में जागरूक नागरिक यह कह रहे हैं कि विकास वैभव की गैर-राजनीतिक और जनोन्मुखी पहल ही उनकी असली ताकत है, जिसे बचाए रखना ज्यादा जरूरी है।

लेट्स इंस्पायर बिहार: एक मिशन, एक आंदोलन

विकास वैभव का जनजागरण अभियान लेट्स इंस्पायर बिहार अब किसी परिचय का मोहताज नहीं। यह संगठन पिछले कुछ वर्षों में बिहार के गांव-गांव, टोले-पंचायत और कस्बों तक पहुंच चुका है। उनका उद्देश्य है—बिहार को 2047 तक देश का अग्रणी राज्य बनाना, लेकिन बिना किसी राजनीतिक समर्थन या विचारधारा के।

बेगूसराय, आरा, सासाराम, छपरा, हाजीपुर सहित कई जिलों में हुए नमस्ते बिहार कार्यक्रमों ने यह दिखा दिया कि बिना पैसे और बिना किसी राजनीतिक दल के झंडे-बैनर के भी बिहार के लोग सिर्फ विचार और उद्देश्य के नाम पर एकजुट हो सकते हैं। यह वर्तमान राजनीति के लिए एक चौंकाने वाला लेकिन सकारात्मक संकेत है।

राजनीति से दूरी ही पहचान?

सोशल मीडिया पर चल रहे कैंपेन में कई लोग कह रहे हैं कि अगर विकास वैभव भी राजनीति में आ गए, तो वे बाकी नेताओं जैसे हो जाएंगे, जबकि आज वे उस मंच पर खड़े हैं जहाँ से वे राजनीति को आइना दिखा रहे हैं।

बिहार के युवाओं, शिक्षकों, सामाजिक कार्यकताओं और बदलाव के इच्छुक नागरिकों में यह चर्चा आम हो गई है कि—

क्या एक योग्य और ईमानदार व्यक्ति को राजनीति से बाहर रहकर भी नेतृत्व नहीं करना चाहिए?

उनकी साफ-सुथरी छवि, बेदाग प्रशासनिक रिकॉर्ड और प्रेरक वक्तव्य उन्हें जननायक की तरह स्थापित कर चुके हैं। ऐसे में कई लोग मानते हैं कि राजनीति में प्रवेश उनके अभियान की निष्पक्षता को कमजोर कर सकता है।

नेतृत्व की जरूरत या वैकल्पिक राजनीति की शुरूआत?

दूसरी ओर, कुछ समर्थकों का मानना है कि यदि बिहार को वास्तव में बदलना है तो ऐसे सक्षम, शिक्षित और ईमानदार लोगों को सत्ता और नीति-निर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी करनी ही चाहिए।

यह वर्ग मानता है कि राजनीति को अच्छा बनाने के लिए अच्छे लोगों का आना जरूरी है, और विकास वैभव जैसे अधिकारी ही वैकल्पिक राजनीति की शुरूआत कर सकते हैं—जहां न जातिवाद हो, न भ्रष्टाचार और न ही केवल नारों की राजनीति।

विकास वैभव क्या सोचते हैं?

अब तक विकास वैभव ने स्वयं कभी राजनीति में आने की मंशा नहीं जताई है। उन्होंने बार-बार यह स्पष्ट किया है कि उनका अभियान पूरी तरह गैर-राजनीतिक है और उनका उद्देश्य केवल बिहार के लोगों को प्रेरित कर एक वैचारिक आंदोलन खड़ा करना है।

वे कहते हैं

> बिहार की आत्मा को जगाने की जरूरत है। अगर लोग अपने अंदर की शक्ति को पहचान लें, तो किसी भी क्रांति के लिए किसी राजनीतिक मंच की आवश्यकता नहीं होगी।

निष्कर्ष : राजनीति से ऊपर उठती एक सोच

विकास वैभव को लेकर जो बहस चल रही है, वह सिर्फ किसी एक व्यक्ति के राजनीति में आने या न आने की नहीं है, बल्कि यह बिहार की बदलती जनचेतना और नई राजनीति की संभावनाओं का भी संकेत है।

इस बहस के केंद्र में सवाल सिर्फ इतना है कि

क्या एक ईमानदार और प्रेरक व्यक्ति का राजनीति से बाहर रहना ही समाज के लिए बेहतर है, या फिर उसे व्यवस्था के भीतर जाकर बदलाव लाने की कोशिश करनी चाहिए?

जवाब चाहे जो हो, लेकिन इतना तय है कि विकास वैभव आज बिहार की नई उम्मीद का नाम बन चुके हैं, और उनका हर कदम अब सिर्फ निजी नहीं, सामाजिक विमर्श का हिस्सा बन चुका है।

चनपटिया की सियासत में उभार मनीष कश्यप का नाम, नया जनाधार

अनूप ना सिंह

बिहार की राजनीति में जब भी आम जनता से जुड़ी आवाजें सियासत के मंच पर दस्तक देती हैं, तो सत्ता समीकरणों में हलचल होना तय होता है। चनपटिया विधानसभा क्षेत्र से मनीष कश्यप द्वारा चुनाव लड़ने की घोषणा ने कुछ ऐसा ही असर डाला है। बीते कुछ वर्षों में मनीष कश्यप ने न केवल पत्रकारिता के माध्यम से जनता की बात को बुलंद किया, बल्कि अब वे खुद जनप्रतिनिधि बनने की दिशा में अग्रसर होते दिख रहे हैं।मनीष कश्यप का चरित्र एक जागरूक, तेजस्वी और संघर्षशील युवा का रहा है। पत्रकारिता से शुरूआत कर उन्होंने जिन मुद्दों को उठाया, वे आम आदमी की पीड़ा से जुड़े थे — चाहे वह प्रवासी मजदूरों का सवाल हो, बेरोजगारी की मार हो या फिर सरकारी योजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार। उन्होंने चनपटिया में रोजगार मेला आयोजित कर केवल आश्वासन नहीं, बल्कि एक समाधान का विकल्प सामने रखा। इसके पहले बांध की मिट्टी कटाई जैसे स्थानीय मुद्दों पर उन्होंने आंदोलन चलाकर जनसहभागिता को जगाया।हाल ही में चनपटिया में आयोजित एक जनसभा में हजारों की संख्या में उमड़ी भीड़ ने यह संकेत दे दिया कि मनीष कश्यप अब एक पत्रकार नहीं, बल्कि एक जनप्रतिनिधि के रूप में स्वीकारे जा रहे हैं। यह समर्थन सिर्फ चेहरे का नहीं, उनके किए गए कामों और जमीनी जुड़ाव का प्रमाण है।फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि मनीष कश्यप किसी दल के सिंबल पर चुनाव लड़ेंगे या स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतरेंगे, लेकिन इतना तय है कि उनके मैदान में उतरने से चनपटिया में सियासी हवा बदल रही है। खासकर युवा, बेरोजगार, ग्रामीण जनता और भ्रष्टाचार से त्रस्त नागरिकों के बीच उनका प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है।उनकी छवि एक निडर और साफ बोलने वाले जनप्रतिनिधि की बन रही है। यह छवि बिहार की पारंपरिक राजनीति से अलग, एक वैकल्पिक नेतृत्व का संकेत देती है।मनीष कश्यप का चुनाव लड़ना केवल एक व्यक्ति की राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन का अगला चरण है। यह उस सोच का प्रतिनिधित्व करता है जो कहती है कि बदलाव केवल बोलने से नहीं, करने से आता है। अब देखना होगा कि यह लोकप्रियता मतों में कैसे बदलेगी, और वे अपनी आवाज को विधानमंडल तक कितनी मजबूती से पहुंचा पाते हैं।पर यह तय है — चनपटिया अब केवल एक विधानसभा सीट नहीं रहा, यह एक जन-जागरण की प्रयोगभूमि बन चुका है।

सृष्टि सिन्हा मौत मामला: आखिर किसके दबाव में एकतरफा कार्रवाई कर रही है बिहार पुलिस? डॉ. अभिजीत सिन्हा ने लगाए गंभीर सवाल

बुद्धा कॉलोनी में सृष्टि सिन्हा की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के बाद उठे सवाल अब और गहराते जा रहे हैं। इस मामले में जहां एक ओर सामाजिक और पारिवारिक बहस तेज है, वहीं अब मृतका के पति डॉ. अभिजीत सिन्हा ने सामने आकर बिहार पुलिस की भूमिका पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने पूरे घटनाक्रम में अपने ऊपर लगे आरोपों को बेबुनियाद और एकतरफा बताया है और पूर्वाग्रह से ग्रस्त कार्रवाई पर आपत्ति जताई है।

"मुझे और मेरे परिवार को बिना जांच के दोषी ठहराया जा रहा है"

डॉ. सिन्हा ने दावा किया कि उनकी पत्नी सृष्टि सिन्हा पिछले कुछ महीनों से गहरे मानसिक तनाव और अवसाद से जूझ रही थीं। "हमने उन्हें कई बार प्रोफेशनल काउंसलिंग लेने को कहा, लेकिन वे सहमत नहीं होती थीं। उनका व्यवहार हाल के दिनों में न सिर्फ बच्चों बल्कि परिवार के साथ भी असामान्य हो गया था," उन्होंने बताया।

घटना के समय की स्थिति को लेकर उन्होंने कहा कि पूरे परिवार ने सृष्टि को बचाने का हरसंभव प्रयास किया। "घटना के बाद हम घबरा गए थे, तुरंत उन्हें अस्पताल ले गए, इसी वजह से पुलिस को सूचना देने में थोड़ी देर हुई," डॉ. सिन्हा ने सफाई दी।

विवाहेतर संबंध और उत्पीड़न के आरोप को बताया "बिल्कुल झूठा"

डॉ. सिन्हा ने ससुराल पक्ष द्वारा लगाए गए विवाहेतर संबंध और मानसिक उत्पीड़न के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा, "बिना किसी प्रमाण के मेरे चरित्र हनन की कोशिश की जा रही है। यह पूरी तरह निंदनीय है। मैं एक पारिवारिक व्यक्ति हूं और अपने बच्चों की देखरेख ही मेरी प्राथमिकता रही है।"

उन्होंने यह भी दावा किया कि इस पूरे मामले को कुछ लोग मीडिया और सोशल मीडिया पर ट्रायल की शक्ल दे रहे हैं, जिससे उनकी और उनके परिवार की छवि को जानबूझकर नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

"पोस्टमार्टम के दौरान हुई मारपीट, अंतिम संस्कार में नहीं हो सके शामिल"

डॉ. सिन्हा ने यह भी आरोप लगाया कि पीएमसीएच में पोस्टमार्टम के दौरान उनके और उनके परिवार के साथ मारपीट की गई, जिसके कारण वे अपनी पत्नी के अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो सके। "हम पूरी तरह से टूट चुके हैं, और इसके बावजूद हमारे साथ जिस तरह का व्यवहार हो रहा है, वह अमानवीय है," उन्होंने कहा।

अधिवक्ता का आरोप झ "पुलिस मित्रों और रिश्तेदारों को भी परेशान कर रही है"

डॉ. सिन्हा के अधिवक्ता ने दावा किया कि मृतका के परिजनों की ओर से लगातार की जा रही शिकायतों के चलते पुलिस उनके दोस्तों और रिश्तेदारों को भी पूछताछ के नाम पर परेशान कर रही है। ह्ययह न सिर्फ कानून का दुरुपयोग है, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण से भी अनुचित है,ह्व उन्होंने कहा।

"सिर्फ तथ्यों के आधार पर हो निष्पक्ष जांच"

डॉ. सिन्हा ने बिहार पुलिस और प्रशासन से अपील की कि मामले की जांच पूरी तरह से निष्पक्ष और तथ्यों के आधार पर की जाए। "हम किसी भी जांच से भाग नहीं रहे हैं, लेकिन हमें भी अपना पक्ष रखने का समान अवसर मिलना चाहिए," उन्होंने कहा।

समाज से की भावनात्मक अपील

अपनी बात के अंत में डॉ. सिन्हा ने समाज और मीडिया से अपील करते हुए कहा कि इस अत्यंत संवेदनशील मामले में बिना साक्ष्य किसी निष्कर्ष पर पहुंचना न केवल अन्याय है, बल्कि एक परिवार को और अधिक तोड़ने जैसा है। उन्होंने कहा, "न्याय व्यवस्था पर भरोसा रखें और व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप से बचें।"

यह मामला अब सिर्फ एक पारिवारिक विवाद नहीं रह गया है, बल्कि इसमें प्रशासन की भूमिका, मीडिया ट्रायल और सामाजिक न्याय के मानकों पर भी सवाल उठने लगे हैं। बड़ा सवाल यही है झ क्या बिहार पुलिस किसी दबाव में एकतरफा कार्रवाई कर रही है? और क्या डॉ. अभिजीत सिन्हा को भी न्याय प्रक्रिया में निष्पक्षता का हक मिलेगा? समय इन सवालों का जवाब देगा।

शहरी निकाय के राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल हुई उप मुख्य पार्षद डॉ विनीता प्रसाद

हरियाणा के गुरुग्राम में शहरी निकाय के राष्ट्रीय सम्मेलन का हुआ आयोजन

हरियाणा के गुरुग्राम में शहरी निकाय के राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करती उप मुख्य पार्षद डॉ विनीता प्रसाद

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ बांका

बांका नगर परिषद के उपमुख्य पार्षद डॉ विनीता प्रसाद ने हरियाणा के गुरुग्राम में आयोजित शहरी निकायों के राष्ट्रीय सम्मेलन में बांका नगरपरिषद के उपसभापति के रूप में प्रतिनिधित्व किया। आपको बता दें की तीन और चार जुलाई को दो दिवसीय शहरी निकायों के अध्यक्षों का राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ समारोह पूर्वक गुरुग्राम में मनाया गया । जिसमें बिहार के अलग-अलग नगर निकायों से 40 प्रतिनिधियों का चयन किया गया था ।जिसमें बांका नगर परिषद के उप मुख्य पार्षद डॉ विनीता प्रसाद का भी चयन हुआ डॉ विनीता प्रसाद ने चर्चित बिहार को बताया कि भारत के सभी राज्यों से प्रतिनिधि को एक बार ग्रुप डिस्कसन के माध्यम से विकास के अनुभव और मापदंड पर चर्चा करने का मौका मिला । साथ ही इस सम्मेलन में सरकार द्वारा चलाई जा रही कई नई योजनाओं की जानकारी दी गई ।इसका लाभ ,नगर परिषद,नगर पंचायत के विकास में मिलेगा ।इस सम्मेलन की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने की इस मौके पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह, राज्यपाल बंगारू दत्तत्रेय शहरी आवास। विभाग के केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश ,सहित सांसद ,विधायक एवं कई जनप्रतिनिधि शामिल हुए।

डेली बिहार जन सरोकार से जुड़े मुद्दों को हमेशा उठाते रहते हैं: डॉ. त्रिपुरारी झा

डेली बिहार हमेशा सच्ची खबर को प्रकाशित करने का काम करती हैं: रौशन माधव

डेली बिहार ने अनोखा अंदाज में मनाया स्थापना दिवस, जरूरतमंदो के बीच भोजन वितरण कर दिया एक नया संदेश

जरूरतमंदो के बीच केक काटकर व भोजन वितरण कर कार्यक्रम की हुई शुरूआत

आशिष कुमार झा

सहरसा:- डेली बिहार ने अनोखे अंदाज में स्थापना दिवस मनाया। समाज के निचले तबके के लोग, जरूरतमंदो के बीच भोजन वितरण कर एक नया संदेश दिया। सर्वप्रथम डेली बिहार के संपादक आशिष कुमार झा ने जरूरतमंदों के बीच केक काटकर सेवा की शुरूआत की तत्पश्चात एस आर हॉस्पिटल के मैनेजिंग डेड डॉ. त्रिपुरारी झा के द्वारा दिव्यांग, शारीरिक और मानसिक रूप से लाचार व्यक्तियों के बीच भोजन वितरण किया गया। एस आर हॉस्पिटल के मैनेजिंग डेड डॉ. त्रिपुरारी झा ने डेली बिहार के द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना किया। उन्होंने डेली बिहार के पूरे टीम सहित संपादक आशिष कुमार झा को स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि डेली बिहार जन सरोकार से जुड़े मुद्दों को हमेशा उठाते रहते हैं। समाजसेवी रौशन माधव ने कहा कि डेली बिहार के स्थापना दिवस पर जरूरतमंदो के बीच भोजन वितरण का जो कार्य किया गया वह सराहनीय है।

उन्होंने डेली बिहार के पूरी टीम को इस अभियान के लिए बधाई देते हुए कहा कि डेली बिहार हमेशा सच्ची खबर को प्रकाशित करने का काम करती हैं। उन्होंने स्थापना दिवस के अवसर पर पूरी टीम को बधाई दिया। एस आर हॉस्पिटल के अकाउंटेंट अमित कुमार ने डेली बिहार के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित भोजन वितरण कार्यक्रम की सराहना किया। भीमराव अम्बेडकर छात्रावास के पूर्व छात्रनायक युवा नेता संजय पासवान ने कहा कि डेली बिहार ने स्थापना दिवस के अवसर पर जरूरतमंदो के बीच भोजन वितरण का कार्य कर समाज में सकारात्मक संदेश देने का काम किया है।

उन्होंने डेली बिहार टीम की उज्जवल भविष्य की कामना किया। युवा नेता शंकर कुमार ने कहा कि डेली बिहार जन समस्याओं को लगातार अपने खबर के माध्यम से उठाते रहते हैं। डेली बिहार जनता की आवाज है। उन्होंने कहा कि डेली बिहार जिस मुखरता के साथ आमजनों का आवाज बनने का काम कर रही हैं वह काबिले तारीफ है। इमाम आजम ने कहा की डेली बिहार के स्थापना दिवस के अवसर जरूरतमंदो के बीच की गई भोजन वितरण का कार्य एक मिशाल है।

नवाज अख्तर ने डेली बिहार के बेबाकी खबर के साथ जरूरतमंदो के बीच की गई भोजन वितरण के कार्य को काफी सराहा। डेली बिहार के स्थापना दिवस के मौके पर मौजूद लोगों ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि डेली बिहार सिर्फ लोगों के बीच समाचार प्रेषण ही नहीं करते बल्कि जन सरोकार से जुड़े मुद्दे के साथ स्थापना दिवस के असवर पर जरूरतमंदो के बीच भोजन वितरण कर काफी अच्छा कार्य किया है इसकी जितनी प्रशंसा की जाए बहुत कम है। डेली बिहार के संपादक आशिष कुमार झा ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए डेली बिहार और रोटी बैंक की पूरी टीम सहित आमजनों के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि सेवा करने में सकून महसूस होता है। मौके पर युवा नेता सुमित कुमार, सूरज कुमार झा, मोहन झा, मो. साहिल, पत्रकार बलराम शर्मा, मो. सरफराज, दीपक सिंह, अमर कुमार, विपीन बिहारी, रोटी बैंक के पंकज यादव सहित कई गण्यमान्य लोग मौजूद थे।

कांवरिया की सेवा में श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक बना सूर्योदय भवन

विधानसभा के स्वतंत्र प्रत्याशी जवाहर कुमार झा अपने आवासीय परिसर सूर्योदय निवास में किया कांवरियों की सेवा

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ बांका

सावन के पवित्र महीने में कांवरियों का जत्था बांका जिले से होकर बाबा बैद्यनाथ धाम जल अर्पण करने गुजरते हैं। इसी क्रम में बांका परिषदन मार्ग में अवस्थित विधानसभा के स्वतंत्र प्रत्याशी का आवास सूर्योदय मार्ग से गुजर रहे, डाक बंम कावरियों का काफिला ,जिसमें महिलाएं, पुरुष, एवं किशोर किशोरियों के साथ-साथ छोटे-छोटे बच्चे भी शामिल थे।सूर्यो
पहुंचे ।जहां पूरे आस्था और भक्ति
जवाहर कुमार झा ने सवों की श्रद्धा
भक्ति के साथ सेवा की। इस मौके
उपस्थित जवाहर कुमार झा ने स्वय
बाबा के भक्तों की सेवा की इस क्रम
में उन्हें गर्म पानी, चाय नाश्ता, ए
फलाहार, कराकर डाक कांवरियों
साथ भक्ति और आस्था से जुड़कर
गहरा आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त वि
अवसर पर जवाहर कुमार झा ने चर्चित बिहार को बताया की ईश्वर की असीम कृपा से आज सूर्योदय परिसर में बाबा के भक्तों का आगमन हुआ है ।जो हम सवों के लिए एक नई सुबह के रूप में सूर्योदय हुआ है।लिहाजा भोलेशंकर की असीम श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक इस प्रांगण से आगामी विधानसभा चुनाव में बांका में एक नया सवेरा होगा ।जहां शिक्षा , रोजगार, स्वास्थ्य के क्षेत्रों में बिकास एवं स्वरोजगार का नया सवेरा होगा।

प्रणाम बांका के साथ सभी बाबा के भक्तों को सादर प्रणाम करता हूं।

सूर्योदय प्रांगण में डाक बम कांवरियों का सेवा करते जवाहर झा की टीम

सूर्योदय भवन

आइडियल होली मिशन आवासीय विद्यालय में संगठन विस्तार पर गोष्ठी का हुआ आयोजन

प्राइवेट स्कूल चिल्ड्रन वेलफेयर एसोसिएशन के तत्वावधान में पदाधिकारीयों का हुआ चयन

संगठन विस्तार गोष्ठी में उपस्थित अध्यक्ष, समन्वयक एवं सभी सम्मानित शिक्षकगण

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ बांका

बांका जिला प्राइवेट स्कूल चिल्ड्रन वेलफेयर एसोसिएशन के तत्वावधान में जिला अध्यक्ष हरि किशोर भारद्वाज की अध्यक्षता में एवं भीष्म नारायण डारेक्टर आइडियल होली मिशन आवासीय विद्यालय कटोरिया की अगुवाई में आइडियल होली मिशन विद्यालय कटोरिया के प्रांगण में प्राइवेट स्कूल चिल्ड्रन वेलफेयर एसोसिएशन के तत्वावधान में कटोरिया और चांदन प्रखंड के प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी का चयन हेतु बैठक का आयोजन किया गया ।।इसके तहत कटोरिया प्रखंड के निम्न पदाधिकारीयों को विभिन्न पदों पर सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया। जिसमें प्रखंड संरक्षक के रूप में आशुतोष तिवारी, प्रभारी के पद पर भीष्म नारायण, प्रखंड अध्यक्ष के पद पर कुमार गौरव (गुड्डू जी)उपाध्यक्ष पद के पद पर विवेकानंद साह, वहीं सचिव के पद पर गिरधारी यादव, संतोष रवि, कोषाध्यक्ष के पद पर सुनील कुमार यादव, गौरव कुमार, कार्यकारिणी सदस्य के पद पर रुचि कुमारी, प्रियंका कुमारी ,मनीषा कुमारी, मोहम्मद मुमताज अंसारी, अनिता भारती ,को मनोनीत किया गया। इसके साथ ही चांदन प्रखंड का भी विस्तार किया गया। जिसमें संरक्षक के पद पर पलटन यादव, अध्यक्ष के पद पर वीरेंद्र पांडे ,सचिव के पद पर शंभू बरनवाल, सहायक सचिव के पद पर लालू यादव, प्रभारी संजय कुमार, उपाध्यक्ष के पद पर प्रमोद कुमार टिंकू ,को मनोनीत किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जिला अध्यक्ष हरि किशोर भारद्वाज जिला समन्वयक आचार्य रघुनंदन शास्त्री एवं सचिव नकुल प्रसाद यादव ने अपने-अपने विचार प्रकट कर सभी नव पदस्थापित पदाधिकारी को शुभकामनाएं दी।

आईडियल होली मिशन आवासीय विद्यालय कटोरिया

आइडियल होली मिशन आवासीय विद्यालय के डायरेक्टर भीष्म नारायण अपने विचार प्रकट करते हुए

प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष डा हरीकिशोर भारद्वाज अपने विचार प्रकट करते

प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के जिला समन्वयक आचार्य रघुनंदन शास्त्री अपने विचार प्रकट करते हुए

वोटर बचाओ, लोकतंत्र बचाओ अभियान के तहत राजद महिला प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष कंचन कुमारी का क्षेत्रीय दौरा

बेलहर विधानसभा के दर्जनों गांव का किया दौरा

कार्यकर्त्ताओं के साथ बैठक करते महिला जिलाध्यक्ष कंचन कुमारी

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ

जिला राजद महिला प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष कंचन कुमारी के नेतृत्व में बांका और बेलहर संविधान सभा क्षेत्रों का बंधन दौरा किया ।जिसके तहत मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण सम्बंधी कार्यों की समीक्षा की इस मौके पर राजद अनुसूचित प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष सत्येंद्र शाह गौड़ ने कहा कि सरकार आयोग को आगे कर मतदाता सूची से दलित आदिवासी, पिछड़े अल्पसंख्यक, गरीबों का नाम मतदाता सूची से काटना चाहती है। उन्होंने आम मतदाताओं से मिलकर उनको जागरूक किया और मतदाता पुनरीक्षण में प्रत्येक मतदाता का नाम शत-प्रतिशत जोड़ने के लिए कार्यों को गति प्रदान करने एवं विशेष सतर्कता बरतने ने की बात कही। वहीं पार्टी नेताओं ने कहा कि जहां शिकायत प्राप्त होती है वहां इसका निराकरण कराया जाय मौके पर अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष विक्रम मंडल जिला अध्यक्ष अर्जुन ठाकुर प्रधान महासचिव मिठन यादव , प्रखंड अध्यक्ष मनोज यादव पवन कुमार पप्पू जफरुल हुदाआदि मौजूद थे।

माई बहिन योजन का फार्म भरवाते जिलाध्यक्ष कंचन कुमारी

मानव दुव्यार्पार विरोधी दिवस पर मुक्ति निकेतन भागलपुर ने बच्चों की सुरक्षा के लिए समन्वित कार्रवाई पर दिया जोर

दुर्व्यवहार पर निकाली गई रैली में शामिल अधिकारीगण।

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

मानव दुव्यार्पार विरोधी दिवस के अवसर पर मुक्ति निकेतन भागलपुर की पहल पर बांका में हुए एक कार्यक्रम में बाल संरक्षण और बाल अधिकारों के क्षेत्र से जुड़े सभी प्रमुख हितधारक एक साथ आए। इस कार्यक्रम में जिला विविध सेवा प्राधिकार न्यायाधीश सह सचिव श्री राजेश कुमार सिंह ,जिला प्रोग्राम पदाधिकारी क्ळउत्र श्री मति रेणु कुमारी ,बाल कल्याण समिति सदस्य श्री विवेकानंद सिंह ,चाइल्ड लाइन बांका के समन्वयक संदीप कुमार ,बचपन बचाओ आंदोलन के शंभू कुमार ,वन स्टॉप सेंटर की अंजना कुमारी ,जिला मिशन समन्वयक उत्र्एह बांका श्री राज अंकुश कुमार मुक्ति निकेतन के कार्य समन्वयक श्री मनोज कुमार सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह,नितेश कुमार, सुलाता कुमारी, आशीष कुमार, बबन कुमार सिंह, ब्रजेश कुमार सिंह के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया और एक सुर से स्वीकार किया कि बाल दुव्यार्पार यानी बच्चों की ट्रैफिकिंग से निपटने के लिए सभी एजेंसियों व विभागों को साथ मिलकर कार्रवाई करने की सख्त जरूरत है ताकि ट्रैफिकिंग गिरोहों में कानून का भय पैदा हो सके।

मुक्ति निकेतन, देश में बाल अधिकारों की सुरक्षा व संरक्षण के लिए 250 से भी अधिक नागरिक समाज संगठनों के देश के सबसे बड़े नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन (जेआरसी) का सहयोगी संगठन है और बांका में बाल अधिकारों की सुरक्षा के लिए काम कर रहा है। जेआरसी बाल श्रम, बच्चों की ट्रैफिकिंग, बाल विवाह और बाल यौन शोषण के शिकार बच्चों की सुरक्षा और न्याय सुनिश्चित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है।

बच्चों की ट्रैफिकिंग से निपटने में कानून प्रवर्तन एजेंसियों के सामने आने वाली वाली चुनौतियों पर चर्चा करते हुए कार्यक्रम में मौजूद अधिकारियों ने सामूहिक रूप से यह माना कि मौजूदा कानूनों के प्रति जागरूकता बढ़ाना, संवेदनशील तबकों को ट्रैफिकिंग गिरोहों और उनके कामकाज के तरीकों के बारे में संवेदनशील बनाना और सभी एजेंसियों के बीच समन्वय को मजबूत करना तत्काल जरूरी है, ताकि मुक्त कराए गए बच्चों के लिए तय समयसीमा में न्याय और पुनर्वास सुनिश्चित किया जा सके। मुक्ति निकेतन ने पिछले वर्ष के दौरान 74 बच्चों को बाल श्रम, ट्रैफिकिंग और 311 बाल विवाह होने से बचाया है। संगठन ने यह रेखांकित किया कि बच्चों की ट्रैफिकिंग केवल बाल मजदूरी या मुनाफे के लिए यौन शोषण तक ही सीमित नहीं है। बहुत से बच्चे, खास तौर से लड़कियां, जबरन विवाह के लिए भी ट्रैफिकिंग का शिकार बनती हैं। यह एक एक ऐसी समस्या है जिसके बारे में कम ही चर्चा की जाती है और रोकथाम के उपायों पर भी ज्यादा बात नहीं होती।

बताते चलें कि जुलाई में मुक्ति निकेतन ने रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के साथ मिलकर बच्चों की ट्रैफिकिंग के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए रेलवे स्टेशनों पर अभियान चलाया। चूंकि ट्रैफिकिंग गिरोह अक्सर बच्चों को दूसरे राज्य ले जाने के लिए रेल मार्ग का उपयोग करते हैं, इसलिए इस अभियान का फोकस यात्रियों, रेल कर्मियों, विक्रेताओं, दुकानदारों और कुलियों को बाल तस्करी के संकेतों की पहचान करने और संदिग्ध मामलों की सुरक्षित रूप से रिपोर्ट करने के लिए संवेदनशील बनाना था।

बच्चों की सुरक्षा के लिए सभी हितधारकों के बीच तालमेल व समन्वय की अहमियत और जिला प्रशासन के सहयोग को रेखांकित करते हुए मुक्ति निकेतन के सचिव श्री चिरंजीव कुमार सिंह ने कहा, ह्लअगर बच्चों की ट्रैफिकिंग रोकना है तो कानूनी कार्रवाई जरूरी है। बाल दुव्यार्पारियों को जब शीघ्र और सख्त सजा मिलेगी, तभी हम उनमें कानून का भय पैदा कर पाएंगे और यह भय ट्रैफिकिंग की रोकथाम के लिए सबसे असरदार उपाय साबित होगा। रोकथाम अभियानों की सफलता के लिए जिले में मजबूत प्रशासनिक समन्वय और समयबद्ध कानूनी कार्रवाई आवश्यक है। इस तरह से काम कर हम न सिर्फ बच्चों की सुरक्षा बल्कि उन ट्रैफिकिंग गिरोहों के नेटवर्क का भी खात्मा कर सकेंगे जो बच्चों का शिकार करते हैं।

दीप प्रज्जवलित करते मुख्य अतिथि

कार्यक्रम में उपस्थिति अधिकारीगण

राजनीति का मतलब पद या पहचान नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी की,सेवा की, समर्पण की, और जन्म कल्याण की: ओंकार यादव

सदस्य राजनीतिक सलाहकार समिति बिहार प्रदेश जदयू ओंकार यादव कर रहे हैं बेलहर का क्षेत्रीय दौरा

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले के बेलहर विधानसभा के बहुचर्चित नेता सदस्य राजनैतिक सलाहकार समिति, बिहार प्रदेश जनता दल यूनाइटेड ओंकार यादव ने चर्चित बिहार से विशेष वार्ता के क्रम में बताया कि विकसित बिहार से विकसित बेलहर बनाने की मेरी मनसा है ।जिसमें मेरे लिए राजनीति का मतलब पद या पहचान नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है, सेवा की ,समर्पण की, और जनकल्याण की, उन्होंने आगे बताया कि माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार की दूर दृष्टि और प्रेरणा से हमने सिर्फ सपने नहीं देखे , बल्कि हमने उन्हें साकार करने की राह भी तय की है मैं उन लोगों की पीड़ा को महसूस किया है ।जो पीढ़ियों से जमीन के हक से वंचित है ।और चेहरे जो सिर्फ गिनती में आते हैं लेकिन किसी सूची में नहीं, उनके लिए भी मेरी लड़ाई जारी है ।मेरी राह जन सेवा की है ,मेरी सोच विकास की है ,और मेरा लक्ष्य सब का सशक्तिकरण है ,आपका साथ आपका विश्वास यही मेरी सबसे बड़ी पूंजी है और यही तो वह ताकत है जिससे हम नामुमकिन को भी मुमकिन बनाएंगे। अब वक्त है हम सब मिलकर एक नया अध्याय लिखे। उन्होंने कहा कि मेरा संकल्प है की बेलहर को स्वस्थ,सशक्त, सुशासित ,खुशहाल, स्वच्छ, समृद्ध ,सुंदर, शिक्षित, एवं सुरक्षित बनाने का है, इसके लिए आप सब मिलकर हमें आशीर्वाद प्रदान करें।

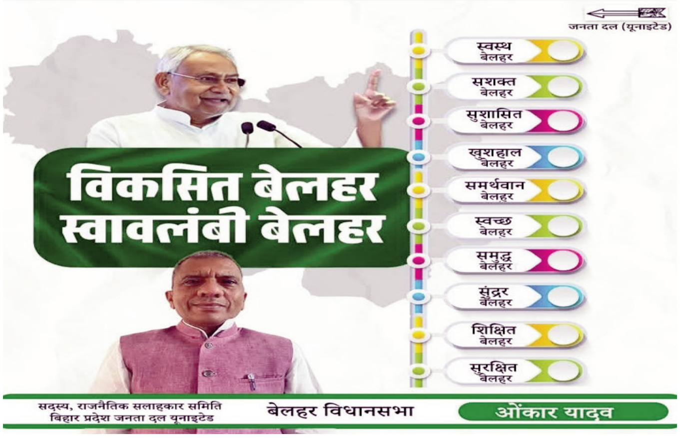

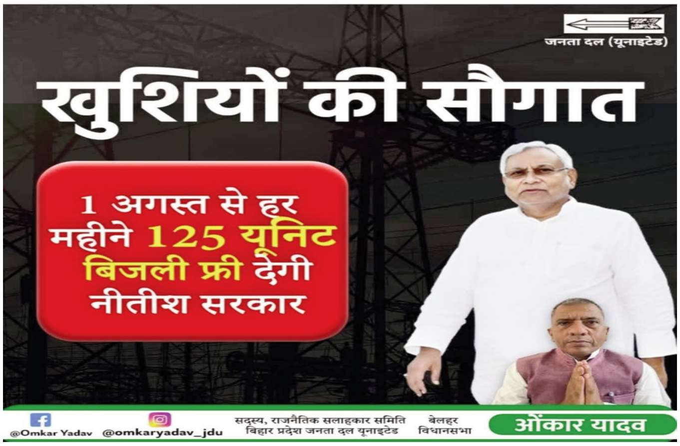

जनता की है आवाजः संजय चौहान के साथ अमरपुर विधान सभा क्षेत्र का होगा नया बिहान

जहां हो अन्याय, वहां खड़ा है एक नाम संजय चौहान

अमरपुर विधानसभा क्षेत्र के गुलनी- कुशाहा गांव में जनता मालिकों से मिलते संजय चौहान

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ

बांका जिले के शंभूगंज प्रखंड के सौहड़ा गांव में जन्म लिए संजय चौहान राष्ट्र के भविष्य के निमार्ता ,शिक्षा जगत से जुड़े हुए एक शिक्षित विद्वान शिक्षक के साथ-साथ बच्चों के लिए अभिभावक भी हैं ।इन्होंने शंभूगंज और अमरपुर सहित समस्त बांका जिले के साथ साथ प्रमंडलीय स्तर पर शिक्षा का एक ऐसा अलख जगाया है।जिसमें सूदूर देहाती इलाकों के निर्धनऔर असहाय बच्चों को निः शुल्क शिक्षा प्रदान करने के साथ शिक्षा संबंधी पाठ्यपुस्तक भी उपलब्ध कराया है । जो कि गौरव की बात है लिहाजा भागलपुर प्रमंडल में इनके विशाल शिक्षा के मंदिर चौहान शिक्षा संस्थान के माध्यम से कई विद्यार्थियों ने शिक्षा ग्रहण कर डॉक्टर, इंजीनियर के साथ-साथ देश बड़े-बड़े प्रशासनिक पदों पर आसीन है। सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए एक ऐसे व्यक्तित्व ने जब सामाजिक स्तर पर लाचारी गरीबी बेरोजगारी एवं स्वास्थ्य के क्षेत्रों में दैनीय स्थिति को जव नजदीक से देखा तो ,इनके अंतर मन की भावना वर्तमान सरकारी तंत्र और व्यवस्था को देखकर आहट हुआ। लिहाजा इन्होंने संकल्प लिया की अमरपुर विधानसभा के निवासियों को जहां दलित, पिछड़ोके साथ साथ महिलाओं एवं लाचार लोगों को इज्जत मिलेगी। जनता की आवाज से इन्होंने कुछ माह पहले राष्ट्रीय जनता दल का दामन थाम लिया ।जिसके माध्यम से वर्तमान समय में वे क्षेत्र की जनता की आवाज सुन रहे हैं । इन्होंने सच्चाई की मुहिम, गरीब की पहचान, और भ्रष्टाचार से राहत पहुंचाने के लिए अमरपुर विधानसभा क्षेत्र में बदलाव लाने के लिए यहां के प्रत्याशी के रूप में अपने को जनता की आवाज बनें हैं और उन्ही के नक्शे कदम पर अमरपुर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांवों का दौरा कर सच्चाई को नजदीक से देख रहे हैं। समझ रहे हैं परख रहे हैं।इन्होंने अमरपुर शब्द का विश्लेषण करते हुए कहा है कि अ-से आवाज म से -मुहिमर से -रचना ,प से -पहचान ,उ से-उत्थान के साथ रहकर भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने का नाम अमरपुर को यह चरितार्थ कर दिखाएंगे। लिहाजा जनता मालिकों का इन्हें अपार जन समर्थन प्राप्त हो रहा है। अपने क्षेत्रीय दौरे के क्रम में जब संजय चौहान अमरपुर विधानसभा के शंभूगंज प्रखंड के गुलनी-कुशाहा गांव में जनसंपर्क अभियान के दौरान दलित टोला पहुंचा तो वहां की जमीनी हकीकत देखकर इनका हृदय द्रवित हो गया। दिल को झकझोर कर रख दिया जहां ग्रामीणों को ना पीने का पानी, ना रहने के लिए पक्का मकान था गरीबी लाचारी से गुर्जर बसर करने वाले इन गरीबों का दर्द देखने वाला वर्तमान सरकार कुंभ करनी नींद सोई हुई है।जहां,जनता 20 वर्षों से सरकार को अपना बहुमूल्य वोट देने के बावजूद ये लोग आज भी मूलभूत सुविधाओं से बंचित हैं जाति और वर्ग के नाम पर समाज को बांटने वालों ने इनकी बदहाली की कभी सूध नही ली। जब विधायक खुद सरकार में मंत्री हैं? तब भी इनकी आवाज अनसुनी क्योंकी जा रही है यह जनता एक बड़ा सवाल है।जनता अब जाग चुकी है ।इस बार अमरपुर बदलाव के हक में निणार्यक फैसला लेगी। अमरपुर अब चुप नहीं बैठेगा। हर अन्याय के खिलाफ लड़ेगा ।अब समय है झूठे सिस्टम को जवाब देने का, अब समय है ,बदलाव का, अब समय है संजय चौहान का यह नारा अमरपुर विधानसभा क्षेत्र के जनता जनार्दन का है । जिनके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य ,और प्रशासनिक ,तंत्र की सेवा का लाभ कोशोदूर हैं, अव अमरपुर की जनता मालिकों की एक ही मांग है कि इस बार चुनेगें दंगल में,सरजमी जुड़ा जो नेता हो। तूफानों में धीर पुरुष पतवार लिए जो खेता हो।। अत्याचार , बेरोजगारी ,दूर करने के साथ उत्तम स्वास्थ्य व्यवस्था, महिलाओं का बिकास को ईमानदारी एवं साहस के साथ जनता के सुख दुख में खड़ा हो वह एक ही नाम है संजय चौहान का । संजय चौहान ने संकल्प लिया है कि अमरपुर विधानसभा क्षेत्र के जनता मालिकों के समक्ष जहां छात्र को दबाया गया, जहां मरीज को तरसाया गया, जहां आम नागरिकों को सरकारी दरवाजे पर रोका गया यह अवसर अपने प्रतिनिधित्व कल में नहीं आने दूंगा। सचमुच 20 साल सत्ता में रहने के बाद भी यह समस्याएं क्यों है?जहां बिजली संकट हो पीने के लिए पानी का किल्लत हो ,सड़क और परिवहन व्यवस्था लचर पचर हो ,शिक्षा की व्यवस्था कमजोर हो। स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव हो, रोजगार की कमी हो ,कृषि संकट , जातीय राजनीति का बोल वाला हो, महिला सुरक्षा का अभाव हो, मनरेगा और योजनाओं में भ्रष्टाचार हो ,तो जनता सवाल पूछेगी ही,इस सवाल को पूछने का हक दिया है अमरपुर में विधानसभा की जनता मालिकों ने सिर्फ और सिर्फ संजय चौहान को ।जो गरीबों की आवाज गरीबों की आवाज बनेंगे। न्याय दिलाएंगे बिजली संकट दूर करेंगे ।पीने के पानी की व्यवस्था दुरुस्त करेंगे ।सड़क और परिवहन व्यवस्था बहाल करेंगे, शिक्षा के साथ साथ ,स्वास्थ्य सेवाएं भी बेहतर करेंगे।

राजद की सदस्यता ग्रहण करते संजय चौहान

रैली में शामिल अपने समर्थकों के साथ संजय चौहान

बाबा भक्तों की सेवा में जुटे महादेव एंक्लेव परिवार

महादेव इनक्लेव का धौरी धर्मशाला में कांवरियों की सेवा महादेव इनक्लेव के सदस्य

बाबाधाम जाते कांवरियागण

महादेव इनक्लेव का धौरी धर्मशाला में कांवरियों की सेवा महादेव इनक्लेव के सदस्य

सेवा शिविर के माध्यम से कांवरियों को मुफ्त उपलब्ध कराई जा रही है भोजन एवं स्वास्थ्य सुविधाएं

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ

विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला के सावन मास में अजगैबीनाथ धाम से बाबा धाम जाने वाले कांवरियों की आस्था इतनी अटूट है, कि शरीर की पीड़ा भी उनके संकल्प को डिगा नहीं पाती। कठिन पैदल यात्रा में कई कांवरियों के पांव में छाले पड़ जाते हैं ।फिर भी इनके पांव थमते नहीं है। रास्ते में जहां-तहां सरकारी धर्मशाला और सेवा समिति हैं ।वहां कुछ देर विश्राम के बाद पुनः से बोल बम के जयकारे के साथ यात्रा पर निकल पड़ते हैं ।कांवरियों से जब पूछा गया कि इतनी तकलीफ में भी कैसे चल पा रहे हैं ।तो उन्होंने मुस्कुरा कर बस यही कहा कि सभी कष्ट बाबा हर लेंगे। तापती दोपहरी हो या बरसात , कांवरियों की भक्ति और आस्था कम नहीं हो रही है ।इस यात्रा में आस्था और समर्पण की पराकाष्ठा है ।जहां भक्त अपनी पीड़ा को भी पूजा का हिस्सा मांगते हैं ।इसी क्रम में बाबा भक्तों की सेवा में महादेव एंक्लेव परिवार पूरी तन्मयता से जुट गया है। स्थानीय धौरी धर्मशाला में अवस्थित महादेव इनक्लेभ के सेवा शिविर में आए हुए कांवरियों की खूब सेवा की जा रही है ।साथ ही साथ अन्य सुविधाएं जैसे भोजन चाय -नाश्ता एवं स्वास्थ्य सुविधा के साथ-साथ एंबुलेंस की सेवा भी के लिए भी महादेव एंक्लेव का यह शिविर कांवरियों की सेवा में दिन रात समर्पित है।महादेव एंक्लेव के जी.एम सुशील सारस्वत ने बताया कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी कांवरिया पथ पर धौरी धर्मशाला में महादेव इनक्लेव का निः शुल्क सेवा शिविर लगाया गया है ।जो निरंतर बाबा धाम जाने बाले यात्रियों की सेवा में तत्परता से दिन रात लगें हैं। वही कांवर यात्रा आस्था निष्ठा और शिव के प्रति समर्पण का प्रतीक है। गंगा की अविरल धारा द्वादश ज्योतिर्लिंग में एक वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग पर निरंतर अर्पित हो रही है ।साल भर कांवर का जल शिव पर अर्पित होता है। लेकिन सावन के महीने में यह जल अर्पण विशेष महत्व रखता है। इसवार श्रावणी मेला में चार सोमवार पड़ रहे हैं ।दूसरे सोमवार को 3.5 लाख भक्तों में जल अर्पित किया ।जो एक नया रिकॉर्ड है ।तीसरी सोमवारी का भी इससे भी अधिक कांवरिया की भीड़ की संभावनाएं बताई जा रही है। राजा संपूर्ण मेला क्षेत्र में प्रशासन की व्यवस्था चुस्त दुरुस्त है।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी महादेव इनक्लेव प्राइवेट लिमिटेड परिवार की ओर से धौरी धर्मशाला में कांवरियों की सेवा हेतु नि:शुल्क सेवा शिविर का संचालित किया जा रहा है। जिसमें कांवरियों की सुविधा के लिए नाश्ता, चाय,भोजन के साथ स्वास्थ्य, सुविधा की मुहैया कराई जाती है।

सुशील सारस्वत

जी.एम
महादेव इनक्लेव प्राइवेट लिमिटेड
बांका

जवाहर कुमार झा का एक संकल्प पांच वचन: बदलेगा बांका समृद्ध होगा बांका

जवाहर कुमार झा ने राष्ट्रपुरुषों को नमन कर बांका के नव निर्माण का लिया संकल्प

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका -बांका के युवा नेता सह बांका विधानसभा के स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में इस बार अपनी भागीदारी निभाने वाले बांका की मिट्टी के लाल जवाहर कुमार झा ने बांका के नवनिर्माण हेतु बांका की जनता मालिकों के समक्ष एक संकल्प और पांच वचन को चरितार्थ करने हेतु प्रणाम बांका के साथ गांव -गांव ,कस्बों कस्बों का भ्रमण कर रहे हैं। शिक्षा स्वास्थ्य, सिंचाई, स्वरोजगार और स्वावलंबन ये पांच संकल्प के साथ बांका को एक नया बांका बनाने के लिए लगातार आम जनता से मिलकर उनसे आशीर्वाद की कामना कर रहे हैं ।जवाहर कुमार झा ने चर्चित बिहार को बताया कि अब समय आ गया है जब राजनीति को सिर्फ चुनाव और सत्ता के दायरे में से निकलकर समाज के बीच जवाब देही और सहभागिता का माध्यम बनाया जाए ।उन्होंने आगे कहा कि अपने भ्रमण के दौरान मैं महसूस कर रहा हूं कि आज जनता के बीच एक गहरी निराशा है ।राजनीतिक दलों और जन प्रतिनिधियों से उम्मीदें लगातार टूटी है ।ऐसे समय में आवश्यक है की राजनीति की भाषा बदलें ,उसका चरित्र बदलें, जिससे आम जनता की भागीदारी बढ़े। इसी क्रम में इन्होंने चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर तिरंगा यात्रा निकालकर जनमानस की चेतना और महापुरुषों के प्रति उनके भावनाओं को जागृत किया। आजाद चौक पर गांधी की चंद्रशेखर आजाद की तस्वीर लगाकर अपने सैकड़ो राष्ट्र भक्तों के साथ माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि देकर नमन किया। साथ ही उन्होंने शहर में स्थापित विभिन्न महापुरुषों के प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि देकर नमन किया। जिससे पूरे शहर में राष्ट्र प्रेम और अपने आदर्शों एवं कर्तव्यों के प्रति एक नई ऊर्जा और जागरूकता का संचार हुआ।

अपने समर्थकों के साथ तिरंगा यात्रा में शामिल जवाहर कुमार झा

बांका जिले की ऐतिहासिक उपलब्धिः संपूर्णता अभियान के तहत सभी संकेतकों में 100% प्राप्ति

जिलाधिकारी नवदीप शुक्ला ने दीप प्रज्वलित कर किया आकांक्षा हाट का शुभारंभ

जिलाधिकारी नवदीप शुक्ला एवं अन्य अधिकारी के द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए

राजेश पंजिकार, ब्यूरो चीफ)

नीति आयोग, भारत सरकार द्वारा संचालित आकांक्षी जिला कार्यक्रम एवं आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम के अंतर्गत बांका जिले ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त की है। जून से सितंबर 2024 की निर्धारित अवधि में जिला प्रशासन ने सभी 6 प्रमुख संकेतकों में 100% लक्ष्य प्राप्त करते हुए राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की है। यह उपलब्धि कुशल प्रशासनिक नेतृत्व, विभागीय समन्वय, मैदानी स्तर के कार्यकताओं की सक्रियता एवं समुदाय की भागीदारी का परिणाम है।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि के उपलक्ष्य में दिनांक 29 जुलाई 2025 को बांका के इनडोर स्टेडियम में एक भव्य सम्मान समारोह सह ह्यआकांक्षा हाटह्ल का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी, बांका श्री नवदीप शुक्ला द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर अपर समाहर्ता, उप विकास आयुक्त, सभी विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारी, चांदन, कटोरिया एवं शंभुगंज के प्रखंड विकास पदाधिकारी, नीति आयोग के डेवलपमेंट पार्टनर, पिरामल फाउंडेशन तथा विभिन्न विभागों के प्रतिनिधि व फ्रंटलाइन वर्कर उपस्थित थे। साथ ही इस कार्यक्रम मे सिविल सर्जन, जिला उद्योग प्रबंधन पदाधिकारी, निदेशक , जिला ग्रामीण विकास अभिकरण , जिला योजना पदाधिकारी, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (आई.सी.डी.एस.), जिला कला-संस्कृति पदाधिकारी, डी.पी.ओ. (एस.एस.ए.), डी.पी.एम. हेल्थ एवं पिरामल फाउंडेशन के अन्य प्रतिनिधि भी शामिल रहे। संपूर्णता अभियान के अंतर्गत बांका जिले ने जो प्रमुख उपलब्धियाँ हासिल कीं, उनमें स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कृषि और बुनियादी सुविधा जैसे विषयों को शामिल किया गया। स्वास्थ्य एवं पोषण के अंतर्गत जिले में सभी गर्भवती महिलाओं का पहली तिमाही में एएनसी पंजीकरण 100% सुनिश्चित किया गया। साथ ही, आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से पूरक पोषण प्राप्त करने वाली गर्भवती महिलाओं की संख्या भी 100% रही। 9 से 11 माह के बच्चों का पूर्ण टीकाकरण भी 100% पूरा किया गया, जो शिशु स्वास्थ्य को सशक्त करने में एक महत्वपूर्ण कदम है। कृषि क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई। मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण में लक्ष्य 5150 कार्ड था, जबकि उपलब्धि 10030 कार्ड रही, जो लक्ष्य का 105% है। इससे किसानों को उनकी भूमि की गुणवत्ता के अनुसार फसल चयन और उर्वरक उपयोग में मदद मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यशील बिजली सुविधा 100% सुनिश्चित की गई। इसके साथ ही, नए सत्र के आरंभ में एक माह के भीतर शत-प्रतिशत छात्रों को पाठ्यपुस्तकों का वितरण भी सुनिश्चित किया गया।

आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम के अंतर्गत चिह्नित तीन प्रखंडों—शंभुगंज, चांदन और कटोरिया—में भी सभी संकेतकों में सराहनीय प्रगति हुई। शंभुगंज प्रखंड ने सभी छह निर्धारित संकेतकों में 100% लक्ष्य प्राप्त किया। चांदन एवं कटोरिया प्रखंडों में स्वास्थ्य, पोषण और कृषि संकेतकों में 100% प्रगति दर्ज की गई, जबकि स्वयं सहायता समूह में फंड प्राप्त करने वाले समूहों का प्रतिशत 91% रहा। कुल मिलाकर, तीनों प्रखंडों ने राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर आकांक्षी प्रखंडों की श्रेणी में अपनी सशक्त पहचान बनाई है।

कार्यक्रम की शुरूआत जिले की संस्कृति को दशार्ते हुए संथाली नृत्य से हुई, जिसका स्वागत टीम की बच्चियों द्वारा भावपूर्ण प्रदर्शन किया गया। इसके पश्चात जिला योजना पदाधिकारी ने जिलाधिकारी का स्वागत अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ भेंटकर किया।

सम्मान समारोह में जिलाधिकारी द्वारा कुल 170 प्रतिभागियों को—जिसमें जिला व प्रखंड स्तरीय अधिकारी, विभागीय प्रतिनिधि, फ्रंटलाइन वर्कर शामिल रहे—स्मृति चिन्ह, गोल्ड मेडल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इनमें 40 सम्मान आकांक्षी जिला कार्यक्रम एवं 130 सम्मान आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम अंतर्गत प्रदान किए गए।

इस अवसर पर जिलाधिकारी द्वारा "आकांक्षा हाट" का भी उद्घाटन किया गया, जिसमें कुल 19 स्टॉल लगाए गए। ये स्टॉल स्वयं सहायता समूहों, जीविका की महिलाओं एवं जिला उद्योग विभाग द्वारा लगाए गए थे। इन स्टॉलों में हैंडलूम, क्राफ्ट्स, बेकरी जैसे स्थानीय उत्पाद प्रदर्शित व विक्रय के लिए रखे गए, जिन्हें आकांक्षा टैग के अंतर्गत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है। यह हाट आगामी 7 दिनों तक चलेगा, जिसका उद्देश्य स्थानीय कारीगरों और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है।

जिलाधिकारी को बुके देकर सम्मानित करते योजना पदाधिकारी

सोशलिस्ट पार्टी (इंडिया) ने धनंजय को बनाया प्रदेश महासचिव, 243 सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान

आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारी में जुटी सोशलिस्ट पार्टी (इंडिया) ने बिहार में संगठन विस्तार करते हुए धनंजय कुमार सिन्हा को प्रदेश महासचिव नियुक्त किया है। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव संदीप पांडेय द्वारा जारी पत्र में इस मनोनयन की औपचारिक घोषणा की गई। यह नियुक्ति बिहार में वैकल्पिक राजनीति के एक सशक्त चेहरे को जिम्मेदारी सौंपने के रूप में देखा जा रहा है।

धनंजय कुमार सिन्हा पूर्व में आम आदमी पार्टी के बिहार मीडिया प्रभारी और जनसुराज अभियान के प्रथम मुख्यालय प्रभारी रह चुके हैं। साथ ही सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में लंबे समय से सक्रिय हैं। उनकी पारदर्शी कार्यशैली और जनसरोकारों से जुड़ी सोच को देखते हुए पार्टी ने उन्हें यह महत्वपूर्ण भूमिका दी है। नियुक्ति के बाद मीडिया से बातचीत में धनंजय कुमार सिन्हा ने कहा कि पार्टी प्रदेश की 243 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगी और समाज के वंचित, हाशिए पर खड़े वर्गों की आवाज बनेगी। उन्होंने बताया कि पार्टी का राष्ट्रीय सम्मेलन अगस्त में पटना में आयोजित होगा, जिसमें चुनावी एजेंडे और जनहित के मुद्दों पर फोकस किया जाएगा। धनंजय ने बताया कि पार्टी पूरी तरह जमीनी मुद्दों पर आधारित राजनीति को बढ़ावा देगी और संगठन को हर गांव तक पहुंचाने का लक्ष्य लेकर चल रही है। उनके मनोनयन पर समर्थकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने खुशी जताई है और शुभकामनाएं दी हैं।

सोशलिस्ट पार्टी (इंडिया) ने प्रदेश स्तर पर संगठन को सक्रिय और मजबूत करने के लिए अन्य पदाधिकारियों की भी घोषणा की है। नई समिति में ओम प्रकाश पोद्दार को भी महासचिव बनाया गया है, जबकि दुखी लाल यादव और भिखारी पासवान को उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी दी गई है। बिंदु कुमारी और बालेश्वर यादव को सचिव नियुक्त किया गया है। नशूर अजमल को कोषाध्यक्ष की भूमिका सौंपी गई है।

प्रदेश प्रवक्ता के तौर पर शशिकांत प्रसाद को चुना गया है। प्रचार-प्रसार और मीडिया समन्वय की जिम्मेदारी आलोक कुमार और अमिताभ कृष्ण को सौंपी गई है, जो संयुक्त रूप से प्रदेश मीडिया प्रभारी के रूप में काम करेंगे। पार्टी से संबद्ध संगठनों के लिए भी समन्वयकों की घोषणा की गई है। आशीष रंजन को सोशलिस्ट किसान सभा, राजीव कुमार को सोशलिस्ट युवजन सभा और इंद्रजीत को सोशलिस्ट स्टूडेण्ट्स यूनियन का समन्वयक बनाया गया है। पार्टी नेतृत्व का मानना है कि यह नवगठित टीम आगामी चुनावों में पार्टी की उपस्थिति को सशक्त बनाएगी और वैकल्पिक, मूल्य आधारित राजनीति को आगे बढ़ाने का कार्य करेगी।

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राजीव कुमार झा

अध्यक्ष,

युवा शक्ति पुस्तकालय, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सुमन अल्ट्रा स्कैन

डॉ. शैलेन्द्र कुमार

M.B.B.S., M.O.C., SPL. Train, (J.L.N.M.C.H.) BGP

चिकित्सा पदाधिकारी

सदर अस्पताल, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

देविका अल्ट्रासाउण्ड सेन्टर

आपके क्षेत्र का एकमात्र 'गीन अल्ट्रासाउण्ड सेन्टर

- Whole Abdomen
- Upper Abdomen
- K.U.B.
- Foetal Well Being
- Lower Abdomen
- Breast + Scrotum

लिंग जांच करना एवं करवाना दंडनीय अपराध है। यहां लिंग जांच नहीं होता है।

मो. : 9122710384

जगतपुर, राम जानकी मंदिर के सामने, बांका

सदर हॉस्पीटल के बगल में

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अमरपुर विधानसभा

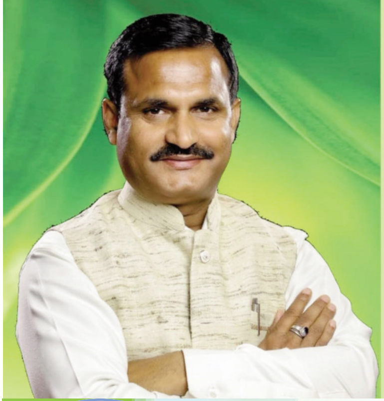

अ – आवाज़ (जनता की)
म – मुहिम (सच्चाई की)
र – रचना (नए बिहार की)
प – पहचान (गांव की, गरीब की)
उ – उठान (कमज़ोर वर्गों का)
र – राहत (भ्रष्टाचार से मुक्ति)

संजय चौहान
राजद नेता, अमरपुर विधानसभा

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मृत्युंजय कुमार
संस्थापक सह निदेशक
शिव ज्योति इंटरनेशनल स्कूल
पता -नेहरू कॉलोनी, रेलवे ओवर ब्रिज के समीप बाबू टोला, बांका-813102

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रोपराइटर -हर्ष राज
पता:-डी एम कोठी चौक
तारा मंदिर रोड बांका
मो.-7070812047

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

विनोद कुमार

प्रोपराइटर : शिव अल्ट्रासाउंड सेंटर, पंजाब नेशनल बैंक के समीप कटोरिया रोड, बांका, मो: 9631889371

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रदीप कुमार गुप्ता

पूर्व मुखिया

कटोरिया, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

भीष्म नारायण

डायरेक्टर

आइडियल होली मिशन आवासीय विद्यालय

कटोरिया, बांका, मो. 9661264318

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रंजीत कुमार

प्रोपराइटर

कुमार बीज भंडार अलीगंज, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रंजित कु.शर्मा

प्रोपराइटर

शक्ति ग्लास हाउस एंड हार्डवेयर, कचहरी रोड बांका, मो.:-8084789834

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

दीपक कुमार

मत्स्य प्रसार पदाधिकारी
बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

गोविन्द राजगढ़िया

बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. संजय कुमार सिंह

B.A.M.S (Patna)
शास्त्री चौक
विश्वकर्मा मंदिर के सामने
बांका-9534603144

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ बलराम मंडल

दुधारी
बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

पंकज कुमार दास

वार्ड पार्षद, वार्ड नंबर – 10
नगर परिषद, बांका,
मो. : 9934757956

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

बरुण कुमार सिंह

प्रधानाध्यापक
N P S झिकटा (यादव टोला) रजौन, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

उत्तम कुमार

बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मनोज कु. मंडल

दुग्ध व्यवसायी
ग्राम -कल्याणपुर
पोस्ट- दुधारी, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अमरेन्द्र कुमार साह

प्रो.मंदार प्रिंटिंग प्रेस
तेलिया
बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

लक्ष्मी नारायण फुल डेकोरेशन

पुरानी ठाकुरवाड़ी बांका
प्रो. सुनील कुमार मालाकार
मो.नं-7783814648

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

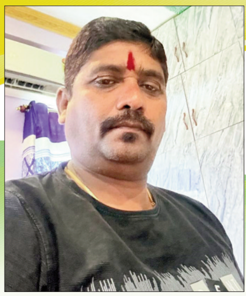

नीरज कुमार

प्रो.भगवती इन्टरप्राइजेज
ब्लॉक गेट के बगल में दुमका -भागलपुर मेन रोड, बौंसी जिला बांका.- मो.-9939542042

अधिकृत डीलर - कजरिया टाइल्स, कोमाकी, टोटो, इलेक्ट्रॉनिक, वाईक

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

आचार्य रघुनंदन शास्त्री

आवासीय मार्शल एकेडमी, खेसर, बांका,
मो.:8002850364

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. सरयू प्रसाद यादव

अध्यक्ष कुसाहा वन समिति
जिला- बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ मौलेश्वरी सिंह विद्याभूषण

M.H.M.B.B.S. (Darbhanga) R.M.P.H. (Patna), D.C.P. (Ranchi)
Regd. No. 16261 दुधारी
बांका, मो. 9955601568

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

हेमंत कुमार
जिला निबंधन पदाधिकारी, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

त्रिपुरारी शर्मा
जिला कृषि पदाधिकारी सह परियोजना निदेशक, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

बलवंत कुमार
जिला खनिज पदाधिकारी
बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

इंदुवाला सिंह
कार्यपालक दंडाधिकारी
बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सूर्य भूषण कुमार
जिला माप तौल पदाधिकारी, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्री सुमित्रानंदन
कार्यपालक पदाधिकारी
नगर परिषद बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मनोरंजन प्रसाद
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
मनरेगा, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जितेन्द्र कुमार
M.V.I
बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

हरिओम ओझा
खान निरीक्षक
बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अनुराग कुमार
कार्यपालक पदाधिकारी
नगर पंचायत -कटोरिया
जिला -बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

संजीव कुमार
कार्यक्रम पदाधिकारी
बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

तुलसी दास
प्रधानाध्यापक
प्रोन्नत मध्य विद्यालय
कठौन,कटोरिया
जिला -बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रवीण कु. सिंह
लब्ध प्रतिष्ठित उद्घोषक सह प्रधान शिक्षक
मो.: 9973869914

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

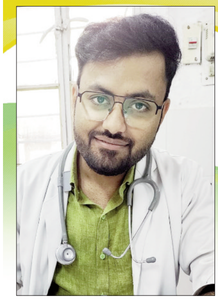

डॉ. कुमार रमन
B.D.S (T.M.U) Moradabad U.P
न्यू रौनक मेडिकल हॉल डैम रोड, बौंसी-बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जय चौहान
प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी
बांका

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

शीतल चौधरी

प्रोपराइटर

शीतल फैन इंडस्ट्रीज, बांका

मो. : 7870802006

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जय माता दी 7870802006, 9431801435 जय माता दी

सुजीत ट्रेडर्स

SINCE 1968 CONA smyle

Vishwas Wahi, Soch Nayi

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो. दुर्गेश बिहारी

आपके शहर में पहली बार

फैटलेस पनीर, सोया पनीर, सोया दही, उचित मूल्य पर मिलता है

प्रिया पनीर स्टोर, डीएम कोठी चौंक बाबू टोला, बांका

मो.-8271221303, 7979846784

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्रेयांश ट्रेडर्स

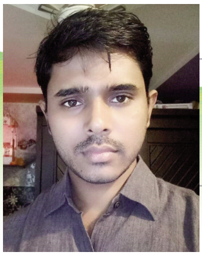

प्रोपराइटर-शशि चौधरी

डी.एम कोठी चौक

बाबू टोला बांका

मो.: 7738243024

शादी विवाह बर्थडे पार्टी के लिए आइसक्रीम हेतु संपर्क करें

आइसक्रीम के थोक विक्रेता

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मंजूर आलम

प्रो.राज स्टोर इलेक्ट्रॉनिक

मो. : 9931648300

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

Prop- Kailash Jee

Mob. : 9523232370
9631068767
7250036633

KAILASH ELECTRICAL WORKSHOP

Refrigerator | Sale & Service | होम सर्विस

Note - House Wiring, A/C, Freez, Cooler, Fan, Camera & All Electrical Work

Add.- DM Kothi Road, Near Panchmukhi Mandir, Babutola, Banka - 813102

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. प्रभा रानी

महिला चिकित्सा पदाधिकारी, सदर अस्पताल, गोड्डा (झारखंड)

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. विनीता प्रसाद

उपाध्यक्ष, नगर परिषद, बांका

कुमार सेनापति

सामाजिक कार्यकर्ता, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राहुल कुमार डोकानियां

समाज सेवी

बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

कंचन कुमारी

जिलाध्यक्ष, राजद महिला प्रकोष्ठ

बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मनीष कु. उर्फ मोनू

जिला उपाध्यक्ष

भाजपा युवा मोर्चा, बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रामचन्द्र गैस एजेंसी

बांका

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अविनाश यादव

पूर्व प्रत्याशी, विधानसभा, लोजपा
पूर्व जिला पार्षद सह
प्रखंड अध्यक्ष
जन सुराज पार्टी, प्रखंड बाराहाट
जिला -बांका, मो.: 9431839668

जन सुराज
JAN SURAAJ

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

विधानपरिषद सभापति अवधेश नारायण सिंह को बुके देकर शिष्टाचार मुलाकात करते

मोती दास

भावी विधानसभा प्रत्याशी, विधानसभा धोरैया
सह जिला सचिव
जदयू बांका
मो.-9939723235

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

आचार्य विश्व स्वरूपानंद अवधूत

प्राचार्य, आनंद मार्ग हाई स्कूल आनंदपुर, बांका, मो.-9932895365

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

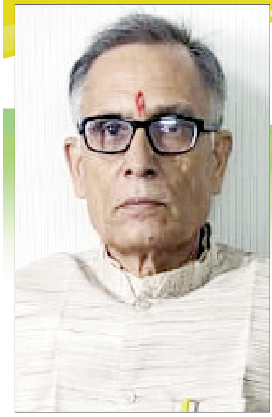

प्रो. (डॉ) हरिकिशोर भारद्वाज

(व्यवस्थापक सह निदेशक)
युग निर्माण मिशन गायत्री विद्यापीठ,
नोनिहार, वार्ड - 6, बांका

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

ओंकार यादव

स्वतंत्रता दिवस

सदस्य

राजनीतिक सलाहकार समिति

बिहार प्रदेश

जनता दल यूनाईटेड

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
हर गाँव, हर द्वार
भाजपा फिर एक बार
अनुपम गर्ग
जिला संयोजक
वाणिज्य प्रकोष्ठ, भाजपा बाँका
अनुपम गर्ग
AnupamGargBJP
जिला संयोजक वाणिज्य प्रकोष्ठ भाजपा बाँका

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
पंडित सुबोध नारायण झा
समाजसेवी
देश की आंतरिक सुरक्षा, बिहार का कायाकल्प
और बांका के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित
ग्राम - बढौना जिला - बांका

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी के अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
चिरंजीव कुमार
सचिव, मुक्ति निकेतन, कटोरिया (बांका)